सितंबर 2020
खंड - XXXVI | अंक - III

एक्ज़िमिअस:
निर्यात लाभ

इस अंक में

- एएफसीएफटीए: अफ्रीका के आर्थिक एकीकरण में भारत के लिए अवसर
- दक्षिण कोरिया के साथ भारत के व्यापार और निवेश संभाव्यता को साकार करना
- पैकेजिंग क्षेत्र: संभाव्यता एवं आगे की राह
- केरल से निर्यात संवर्धन: अंतर्दृष्टि एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य
- भारतीय रसायन उद्योग: नई दिशाएं
- व्यापार और आर्थिक विकास पर निबंध
- इंडिया एक्ज़िम बैंक की ऋण-व्यवस्थाएं

तिमाही प्रकाशन:

इंडिया एक्ज़िम बैंक

केन्द्र एक भवन, 21वीं मंज़िल,
विश्व व्यापार केन्द्र संकुल, कफ़ परेड,
मुंबई – 400 005.
फोन: 022 2217 2600
ईमेल: ccg@eximbankindia.in
www.eximbankindia.in
www.eximmitra.in

एएफसीएफटीए: अफ्रीका के आर्थिक एकीकरण में भारत के लिए अवसर

पिछले दो दशकों में अफ्रीका का अंत: क्षेत्रीय व्यापार लगभग 14% के आसपास बना हुआ है। यह उत्तरी अमेरिका मुक्त व्यापार करार (नाफ्टा) जैसे अन्य अंत: क्षेत्रीय व्यापार खंडों की तुलना में काफी कम है। नाफ्टा का अंत: क्षेत्रीय व्यापार हिस्सा 2018 में 41.2% के उच्चतम स्तर पर रहा। इसके बाद यूरोपीय संघ (28 राष्ट्र) (38.8%), दक्षिण पूर्व एशियाई देशों का संगठन (आसियान) (22.0%) और लैटिन अमेरिकी एकीकरण संघ (लाइआ 13.6%) का स्थान है।

अफ्रीका में आठ क्षेत्रीय आर्थिक संगठन हैं। इनमें अरब मग़रिब यूनियन (यूएमए), पूर्वी और दक्षिण एशिया के लिए एक बाजार (कोमेसा), कम्युनिटी ऑफ साहेल-सहारन स्टेट्स (सीईएन-एसएडी), इकनॉमिक कम्युनिटी ऑफ वेस्ट अफ्रीकन स्टेट्स (इकोवास), अंतर-सरकारी विकास प्राधिकरण (आईजीएडी) और दक्षिण अफ्रीका विकास समुदाय (सैडेक) शामिल हैं। इनके अलावा, चार उप-क्षेत्रीय समूह भी हैं। इसके बावजूद अफ्रीका का अंत: क्षेत्रीय व्यापार निरंतर न्यून बना हुआ है। यह न्यून अंत:-अफ्रीकी व्यापार इस महाद्वीप में न्यून आपूर्ति क्षमताओं, कमजोर कनेक्टिविटी और अधिक व्यापार बाधाओं की ओर भी संकेत करता है।

अफ्रीकी अर्थव्यवस्थाओं के अंत: क्षेत्रीय निर्यातों का देश-वार विश्लेषण बताता है कि उनके कुल निर्यातों में अफ्रीका को निर्यातों का हिस्सा न्यून बना हुआ है। महाद्वीप के बड़े निर्यातकों में से दक्षिण अफ्रीका के कुल निर्यातों में अफ्रीका को निर्यातों का हिस्सा 2018 में 26.5% रहा। इसके बाद मिस्र (वैश्विक निर्यातों का 16.2%), नाइजीरिया (13.2%), अंगोला (5.2%), अल्जीरिया (3%) और लीबिया (0.3%) का स्थान रहा।

इसके अलावा, निर्यात उत्पाद संकेंद्रण के मामले में एशिया (0.2), लैटिन अमेरिका और कैरीबियाई क्षेत्र (0.1), उत्तरी अमेरिका (0.2) या यूरोप (0.1) की तुलना में अफ्रीका (0.4) सबसे ऊपर है। अफ्रीकी देशों का निर्यात मुख्य रूप से कमोडिटी केंद्रित है। यही वजह है कि अंतरराष्ट्रीय कमोडिटी मूल्यों में उतार-चढ़ाव से अफ्रीकी देश प्रभावित होते हैं। इसलिए अफ्रीकी देशों में निर्यात विविधीकरण (उत्पादित वस्तुओं के प्रकार और निर्यात बाजार दोनों में) की जरूरत बढ़ती जा रही है। इससे कमोडिटी पर उनकी निर्भरता कम होगी और उन्हें वैल्यू चेन में ऊपर बढ़ने में भी मदद मिलेगी।

अफ्रीका ने व्यापार की इस अंतर्महाद्वीपीय न्यूनता का संज्ञान लिया है और अफ्रीकी महाद्वीप मुक्त व्यापार क्षेत्र (एएफसीएफटीए) स्थापित करने के लिए किए गए करार में आर्थिक एकीकरण की ओर बढ़ते इसके प्रयास स्पष्ट दिखाई देते हैं। एएफसीएफटीए आर्थिक एकीकरण की दिशा में लगातार प्रयास करते रहने का परिणाम है। इस पर 21 मार्च, 2018 को किगाली, रवांडा में हस्ताक्षर किए गए थे। वर्तमान में एरीट्रिया को छोड़कर अफ्रीकी संघ के सभी देशों ने इस पर हस्ताक्षर किए हैं। 29 अप्रैल, 2019 को सिएरा लिओन और सहरावी रिपब्लिक द्वारा सत्यापन के साथ न्यूनतम सदस्यों द्वारा सत्यापित होने की शर्त पूरी हो गई थी और इस तरह मुक्त व्यापार क्षेत्र अस्तित्व में आया। एएफसीएफटीए 30 मई, 2019 से प्रभावी हुआ। एएफसीएफटीए के अंतर्गत व्यापार जुलाई 2020 से शुरू होना था, किन्तु कोविड-19 महामारी के चलते अब यह 2021 से शुरू किया जाना प्रस्तावित है। इंडिया एक्ज़िम बैंक के एएफसीएफटीएः अफ्रीका के एकीकरण में भारत के लिए अवसर विषयक शोध अध्ययन में एएफसीएफटीए के जरिए भारत के लिए विद्यमान अवसरों की पड़ताल की गई है। ऐसा आकलन किया गया है कि एएफसीएफटीए के अंतर्गत व्यापार से अंतः अफ्रीकी व्यापार में कम से कम 52.3% की बढ़ोत्तरी होगी। तथापि, यह करार कितना प्रभावी होता है, यह व्यापार संबंधी बुनियादी ढांचे में सुधार और परिवहन लागत पर निर्भर करता है।

भारत और अफ्रीका के बीच अच्छे व्यापार संबंध रहे हैं और यह साझेदारी समय के साथ मजबूत होती रही है। अफ्रीका के साथ भारत का द्विपक्षीय व्यापार 2008-09 के 39.0 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2014-15 में 71.5 बिलियन यूएस डॉलर हो गया। अफ्रीका के साथ भारत के व्यापार रुझान वैश्विक व्यापार के अनुरूप रहे हैं। लगातार दो वर्षों तक गिरावट के बाद 2017-18 के बाद इसमें सुधार आया है। अफ्रीका के साथ भारत का कुल व्यापार 2017-18 के 62.7 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2018-19 में 69.7 बिलियन यूएस डॉलर हो गया है। भारत 2017 से अफ्रीका का दूसरा सबसे बड़ा व्यापार भागीदार बना हुआ है।

तथापि, अफ्रीका में शीर्ष 5 निवेशकों (एफडीआई स्टॉक की दृष्टि से) में भारत का नाम नहीं है, जबकि अन्य के साथ-साथ फार्मासूटिकल और स्वास्थ्य सेवा, ऊर्जा, आईसीटी, विद्युत, सड़क, रेलवे और ऑटोमोबाइल जैसे क्षेत्रों में ग्रीनफील्ड और ब्राउनफील्ड दोनों तरह की परियोजनाओं में भारत की मौजूदगी है। इसलिए भारत को अपनी विदेश नीति में एएफसीएफटीए को प्राथमिकता देने की महती आवश्यकता है। इसके लिए ऐसी रणनीतियां बनाने की जरूरत है जो अफ्रीकी महाद्वीप की विकासात्मक जरूरतों को पूरा कर सके।

इस संबंध में, इंडिया एक्ज़िम बैंक के शोध अध्ययन में भारत के लिए अफ्रीकी देशों के साथ व्यापार और निवेश संबंध बढ़ाने के लिए तीन महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को रेखांकित किया गया है। एकीकरण से अफ्रीका में क्षेत्रीय वैल्यू चेन (आरवीसी) के विकास की राह आसान होगी और वैश्विक वैल्यू चेन (जीवीसी) में अफ्रीका का एकीकरण करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा, अफ्रीका की बुनियादी ढांचागत सुविधाओं तथा कनेक्टिविटी में भी सुधार आएगा। अन्य के साथ-साथ, अफ्रीका में व्यापार वित्त की राह भी आसान हो सकेगी।

जीवीसी में अफ्रीका की वर्तमान स्थिति के मूल्यांकन के लिए इस अध्ययन में जीवीसी में अफ्रीका की हिस्सेदारी और जीवीसी में अफ्रीका की स्थिति का भी विश्लेषण किया गया है। अधिकतर अफ्रीकी अर्थव्यवस्थाओं की जीवीसी भागीदारी न्यून और जीवीसी स्थिति दर उच्च है। वजह है, उनका उच्च घरेलू वैल्यू-एडेड निर्यात (मुख्यतः प्राथमिक कमोडिटी) और अपस्ट्रीम गतिविधि (वैल्यू चेन का प्रारंभिक हिस्सा) में निवेश इसलिए भारत का निजी क्षेत्र अफ्रीकी देशों को वैल्यू एडिशन और कृषि, विनिर्माण तथा सेवा वैल्यू चेन में एकीकरण में सहायक हो सकता है। जीवीसी भागीदारी दर जीवीसी में किसी देश की भागीदारी के स्तर को दर्शाती है, जबकि जीवीसी स्थिति दर से यह पता चलता है कि यह भागीदारी किस चरण में रही है। तेल जैसे प्राकृतिक संसाधनों अथवा अन्य कमोडिटी के निर्यातों में उल्लेखनीय हिस्सा रखने वाले देशों का उच्च घरेलू वैल्यू एडेड व्यापार होता है, क्योंकि ऐसे निर्यात जीवीसी के प्रारंभिक चरणों में आते हैं और इनमें बमुश्किल ही किसी विदेशी इनपुट की जरूरत होती है।

कोविड-19 महामारी फैलने से अफ्रीका का एकीकरण और लचीली क्षेत्रीय वैल्यू चेन बनाना और भी महत्त्वपूर्ण हो गया है। इंडिया एक्ज़िम बैंक के इस अध्ययन में इस बात का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है कि भारत और अफ्रीका कृषि-प्रसंस्करण, फार्मासूटिकल, स्वास्थ्य सेवा और अक्षय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा सकते हैं, ताकि आर्थिक सुधार प्रक्रिया जारी रखी जा सके। सेंट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक, मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, मॉरिटानिया, जिबूती और गांबिया जैसे देशों के लिए भागीदारी सूचकांक 0.5 से ऊपर है, जो उच्चतर जीवीसी भागीदारी दर को दर्शाता है। अपने निर्यातों में निश्चित वैल्यू एडिशन या बंदरगाह व्यापार के उल्लेखनीय हिस्से के चलते इन देशों की जीवीसी भागीदारी उच्चतर है। कुछ अफ्रीकी अर्थव्यवस्थाओं का जीवीसी भागीदारी स्थिति सूचकांक उच्चतर है, जिसका मतलब है कि अपस्ट्रीम गतिविधि उच्चतर है, किन्तु नाइजीरिया, मिस्र और अंगोला जैसी निम्नतर जीवीसी भागीदारी जीवीसी में न्यूनता को दर्शाती है। तथापि दो देशों की जीवीसी स्थिति एक समान है और जीवीसी भागीदारी की अलग-अलग डिग्री है। इसलिए किसी देश के लिए वैश्विक आपूर्ति के महत्त्व को समझने के लिए दोनों पैरामीटरों को साथ-साथ देखा जाता है। मॉरीशस की जीवीसी भागीदारी उच्च है, लेकिन ऋणात्मक जीवीसी स्थिति जीवीसी में उच्च भागीदारी के साथ जीवीसी में तुलनात्मक रूप से डाउनस्ट्रीम स्थिति

चुनिंदा अफ्रीकी देशों की जीवीसी भागीदारी और स्थिति

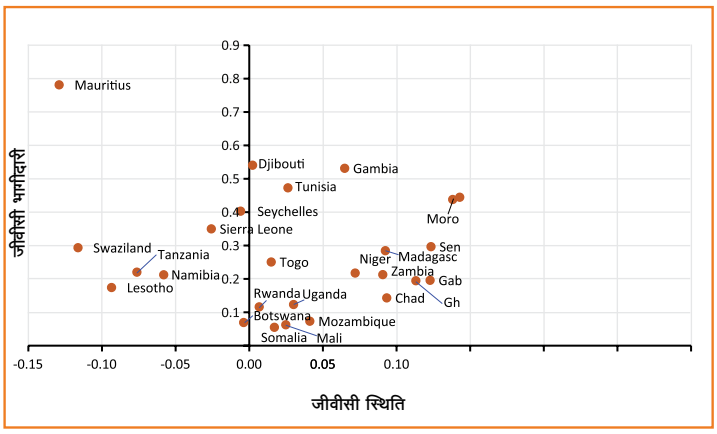

स्रोतः अंकटाड ईओआरए डेटाबेस और एक्ज़िम बैंक शोध अध्ययन

(निर्यातों में विदेशी मूल्य वर्धन का उच्चतर हिस्सा) को दर्शाती है।

इसलिए भारत का निजी क्षेत्र अफ्रीकी देशों को आगामी वैल्यू एडिशन और कृषि, विनिर्माण तथा सेवा वैल्यू चेन से एकीकरण में सहायता कर सकता है। कोविड-19 महामारी के बाद तो अफ्रीका का एकीकरण और लचीली क्षेत्रीय वैल्यू चेन विकसित करना और महत्त्वपूर्ण हो गया है। भारत और अफ्रीका कृषि प्रसंस्करण, फार्मासूटिकल्स सहित स्वास्थ्य सेवा और अक्षय ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा सकते हैं, जिससे आर्थिक सुधार की राह प्रशस्त होगी। अंतः क्षेत्रीय व्यापार को सुगम बनाने में इन्फ्रास्ट्रक्चर की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। परिवहन और सुविधा इन्फ्रास्ट्रक्चर सहित अफ्रीका का वार्षिक इन्फ्रास्ट्रक्चर घाटा 67.6 बिलियन यूएस डॉलर से 107.5 बिलियन यूएस डॉलर के बीच आंका जा रहा है। इस संबंध में, इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास को सुगम बनाने और वित्तपोषण की कमी को पूरा करने के लिए परंपरागत वित्तपोषण पद्धतियों के अलावा वित्तपोषण की कोई नवोन्मेषी व्यवस्था अपनानी होगी। इसके लिए अन्य के साथ-साथ निजी क्षेत्र में निवेश बढ़ाने, मिश्रित वित्तपोषण और पीपीपी मॉडल पर काम किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त, व्यापार वित्त तक सीमित पहुंच अफ्रीका के व्यापार के लिए और विशेष रूप से लघु उद्यमों के लिए बाधा रही है। इसलिए अफ्रीका की वित्तीय संस्थागत क्षमता को मजबूत करने के लिए अफ्रीका की क्षेत्रीय संस्थाओं के साथ भारतीय वित्तीय संस्थाओं का समन्वय बढ़ाने की जरूरत है।

15वें सीआईआई-एक्ज़िम बैंक डिजिटल कॉन्क्लेव के दौरान एक्ज़िम बैंक के शोध अध्ययन का विमोचन

भारतीय निर्यात-आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक) और भारतीय उद्योग महासंघ (सीआईआई) ने विदेश मंत्रालय और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के साथ मिलकर 22-24 सितंबर, 2020 तक भारत-अफ्रीका साझेदारी पर 15वें सीआईआई-एक्ज़िम बैंक डिजिटल कॉन्क्लेव का आयोजन किया। कोविड-19 महामारी के चलते यह आयोजन पहली बार वर्चुअल प्लैटफॉर्म पर किया गया। पहले कॉन्क्लेव का आयोजन 2005 में नई दिल्ली में किया गया था। समय के साथ यह कॉन्क्लेव भारत-अफ्रीका भागीदारी को मजबूत करने और आर्थिक गतिविधियां बढ़ाने के लिए एक प्रमुख कार्यक्रम के रूप में उभरा है। इस कॉन्क्लेव से अफ्रीकी बाजारों में भारतीय परियोजना निर्यात बढ़ाना भी सुगम हुआ है। बढ़ती भारत-अफ्रीका आर्थिक गतिविधियां इन कार्यक्रमों में बनने वाले हाई-प्रोफाइल संपर्कों की कसौटी हैं। यह कॉन्क्लेव ऐसा आयोजन है, जिसमें भारत और अफ्रीका से महत्त्वपूर्ण हस्तियां हिस्सा लेती हैं, जो इन दोनों क्षेत्रों के बीच भागीदारी को और मजबूत करने के लिए पुल का काम करती रही हैं। 15वें कॉन्क्लेव का उद्घाटन माननीय विदेश मंत्री श्री एस. जयशंकर द्वारा किया गया। इस कॉन्क्लेव में नाइजीरिया के माननीय उद्योग, व्यापार और निवेश मंत्री श्री ओटुंबा नियी आदेबायो, केन्या की विदेश मामलों की माननीय कैबिनेट सचिव सुश्री रेशेल अवाउर ओमामो, मॉरीशस के माननीय उप प्रधानमंत्री डॉ. मोहम्मद अनवर हुसनू और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो के माननीय प्रधानमंत्री श्री सिल्वेस्टर इलुंगा विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित रहे। चारों माननीय विशिष्ट अतिथियों ने लंबे समय से चली आ रही भारत-अफ्रीका भागीदारी के बारे में बात की और अपने संबंधित महाद्वीप तथा देशों में विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की जरूरत बताई। उद्घाटन सत्र में इंडिया एक्ज़िम बैंक के शोध अध्ययन एएफसीएफटीएः अफ्रीका के आर्थिक एकीकरण में भारत के लिए अवसर का विमोचन किया गया। इस दौरान भारत के माननीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर, नाइजीरिया के माननीय उद्योग, व्यापार और निवेश मंत्री श्री ओटुंबा नियी आदेबायो, केन्या की विदेश मामलों की माननीय कैबिनेट सचिव सुश्री रेशेल अवाउर ओमामो, मॉरीशस के माननीय उप प्रधानमंत्री डॉ. मोहम्मद अनवर हुसनू और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो के माननीय प्रधानमंत्री श्री सिल्वेस्टर इलुंगा, भारतीय निर्यात-आयात बैंक के प्रबंध निदेशक श्री डेविड रस्कीना, कोटक महिंद्रा बैंक के प्रेसिडेंट श्री उदय कोटक, सीआईआई के महानिदेशक श्री चंद्रजीत बनर्जी और सीआईआई-अफ्रीका कमेटी के सह-अध्यक्ष श्री एस. कुप्पुस्वामी विशेष रूप से उपस्थित रहे। ■

दक्षिण कोरिया के साथ भारत के व्यापार और निवेश संभाव्यता को साकार करना

दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था काफी हद तक उद्योगों और व्यापार पर निर्भर है। यह वैश्विक स्तर पर 12वीं और एशिया में चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इसने वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के इतिहास में सबसे ज्यादा वृद्धि दर्ज की है। इसकी जीडीपी 1961 के 2.4 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2019 में 1.6 ट्रिलियन यूएस डॉलरकी हो गई और 1961 में जो प्रति व्यक्ति आय 93.8 यूएस डॉलर थी, वह 2019 में बढ़कर 31,430.6 यूएस डॉलर हो गई।

दक्षिण कोरिया के साथ भारत का व्यापार

भारत और दक्षिण कोरिया के बीच द्विपक्षीय व्यापार काफी बढ़ा है। 2001 में कुल व्यापार 1.6 बिलियन यूएस डॉलर का था, जो 2009 में बढ़कर 12 बिलियन यूएस डॉलर हुआ और 2019 में 20.8 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंच गया। 2009 में निर्यात 3.8 बिलियन यूएस डॉलर से बढ़कर 2019 में 4.7 बिलियन यूएस डॉलर तक हो गया। भारत से दक्षिण कोरिया को निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं एल्यूमीनियम और इससे तैयार वस्तुएं; खनिज ईंधन और उत्पाद (खासकर केरोसिन तेल) हैं। 2019 में भारत से दक्षिण कोरिया को कुल निर्यातों का एक तिहाई से अधिक हिस्सा इन्हीं उत्पादों का रहा। हालांकि खनिज ईंधन के निर्यात में गिरावट आई है, जो 2009 में 55.9% से घटकर 2019 में 17% रह गया। दक्षिण कोरिया को भारत से निर्यात की जाने वाली अन्य प्रमुख वस्तुएं ऑर्गेनिक रसायन, लौह एवं इस्पात, मशीनरी और कपास आदि हैं।

भारत द्वारा दक्षिण कोरिया से आयातों में भी दोगुने से ज्यादा की बढ़ोत्तरी हुई है। 2009 में दक्षिण कोरिया से भारत द्वारा किए गए आयात 8.2 बिलियन यूएस डॉलर के रहे, जो 2019 में 16.1 बिलियन यूएस डॉलर के हो गए। दक्षिण कोरिया भारत के लिए 8वां सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता देश के रूप में उभरा है। 2019 में भारत के कुल वैश्विक आयातों में 3.4% हिस्सा दक्षिण कोरिया का ही रहा है। दक्षिण कोरिया से भारत को आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, लौह एवं इस्पात, मशीनरी, प्लास्टिक, कार्बनिक रसायन, वाहन और खनिज ईंधन उत्पाद आदि हैं।

आम तौर पर दक्षिण कोरिया के साथ भारत का व्यापार घाटा रहता है, जो हाल के वर्षों में काफी बढ़ गया है। यह भारत को दक्षिण कोरिया के शुद्ध निर्यात में तीव्र वृद्धि को दर्शाता है। दक्षिण कोरिया के साथ भारत का व्यापार घाटा 2001 में 679 मिलियन यूएस डॉलर से लगभग 17 गुना बढ़कर 2019 में 11.5 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंच गया। भारत के लिए व्यापार घाटे वाले सबसे बड़े क्षेत्रों में इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, लौह एवं इस्पात, मशीनरी और प्लास्टिक की वस्तुएं जैसे क्षेत्र शामिल हैं। ये ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारत का व्यापार घाटा 2019 में 1 बिलियन यूएस डॉलर से ज्यादा का रहा है। हालांकि यह उल्लेखनीय है कि भारत–दक्षिण कोरिया व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (सीईपीए) के परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच कुल व्यापार लगभग दोगुना हो गया है। तथापि,बढ़ता व्यापार घाटा द्विपक्षीय व्यापार संबंधों की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए चिंता का विषय है। इसलिए दोनों देशों का परस्पर लाभकारी और अधिक संतुलित व्यापार की दिशा में मिलकर काम करना आवश्यक है।

भारत–दक्षिण कोरिया द्विपक्षीय निवेश

वित्त मंत्रालय, भारत सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 1996 से मार्च 2020 के दौरान दक्षिण कोरिया में भारत का अनुमोदित संचयी निवेश 593.9 मिलियन यूएस डॉलर रहा। एफडीआई मार्केट्स डेटाबेस के अनुसार, भारत 2009 से 2019 के दौरान 14 भारतीय कंपनियों द्वारा 17 एफडीआई परियोजनाओं में 913 मिलियन यूएस डॉलर के निवेश के साथ दक्षिण कोरिया में 15वें सबसे बड़े निवेशक के रूप में उभरा है। इस अवधि के दौरान धातु क्षेत्र में सर्वाधिक निवेश रहा। इसके बाद ऑटोमोटिव ओईएम, संचार, खाद्य और पेय पदार्थों तथा वित्तीय सेवाओं का स्थान रहा।

उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार, अप्रैल 2000 से मार्च 2020 के दौरान, दक्षिण कोरिया से भारत का कुल एफडीआई आवक 4.5 बिलियन यूएस डॉलर हो गया, जो इस अवधि के दौरान भारत के कुल एफडीआई आवक का 0.95% है। वर्तमान में दक्षिण कोरिया भारत में 13वां सबसे बड़ा निवेशक है। धातु उद्योग, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, प्राइम मूवर्स, मशीन टूल, अस्पताल और डायग्नोस्टिक सेंटर आदि दक्षिण कोरिया से निवेश लाने वाले प्रमुख क्षेत्र हैं।

दक्षिण कोरिया को भारत से निर्यात को बढ़ाने के लिए संभावित निर्यात वस्तुएं द्विपक्षीय व्यापार संबंधों को बढ़ाने और दक्षिण कोरिया के साथ भारत के बढ़ते व्यापार घाटे को कम करने के लिए द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने की रणनीति में, भारत द्वारा दक्षिण कोरिया को निर्यात की जाने वाली ऐसी संभावित वस्तुओं को चिह्नित करना शामिल होगा, जो वहां बड़े पैमाने पर आयात की जाती हैं। साथ ही भारत की निर्यात क्षमता बढ़ाने और दक्षिण कोरिया के आयातों में भारत से कम निर्यात होने वाले उत्पादों का निर्यात बढ़ाने जैसी रणनीति भी शामिल है। भारत से दक्षिण कोरिया को निर्यात की जाने वाले प्रमुख संभावित वस्तुओं में अन्य के साथ साथ खनिज ईंधन और इसके उत्पाद (एचएस –27); इलेक्ट्रॉनिक मशीनरी और उपकरण (एचएस –85); मशीनरी और यांत्रिक उपकरण (एचएस –84); ऑप्टिकल, फोटोग्राफिक, सिनेमैटोग्राफिक, मेडिकल या सर्जिकल उपकरण (एचएस –90); रेलवे या ट्रामवे (एचएस –87) के अलावा अन्य वाहन; लौह एवं इस्पात (HS–72); अयस्क, लावा (स्लैग) और राख (एचएस –26); कार्बनिक रसायन (HS–29); प्लास्टिक और इस से तैयार वस्तुएं (एचएस –39); अकार्बनिक रसायन (एचएस –28); विविध रासायनिक उत्पाद (HS– 38); बुने हुए या क्रोशिया किए हुए को छोड़कर अपैरल और क्लोदिंग (एचएस –62); और दवा उत्पाद (HS–30) आदि शामिल होंगे।

भारत में दक्षिण कोरियाई निवेश के लिए संभावित क्षेत्र

भारत में एफडीआई को सुगम बनाने और इसे अवधारणा से नकदी प्रवाह में तब्दील करने के लिए एक निवेश संवर्धन और सुगमीकरण एजेंसी, इन्वेस्ट इंडिया की स्थापना की गई है। वहीं, दक्षिण कोरिया ने भारत में निवेश को बढ़ाने और सुगम बनाने के लिए कोरिया प्लस नाम का एक प्लैटफॉर्म शुरू किया है। दक्षिण कोरिया ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, जहाज निर्माण, स्टील और डिजिटल मॉनिटरों, मोबाइल फोन और सेमी-कंटडक्टरों जैसे उच्च-प्रौद्योगिकी वाले उत्पादों का प्रमुख वैश्विक उत्पादक है। भारत दक्षिण कोरिया से प्रौद्योगिकी हस्तांतरण से काफी लाभ उठा सकता है। भारत में दक्षिण कोरियाई निवेश की संभावना वाले क्षेत्र निम्नलिखित अनुसार हैं।

रक्षा क्षेत्र: स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के अनुसार, सऊदी अरब के बाद भारत रक्षा उपकरणों का दूसरा सबसे बड़ा आयातक है। हालांकि भारत रक्षा उत्पादों का प्रमुख आयातक है, किन्तु हाल के वर्षों में संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, फ़िनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, इज़रायल, दक्षिण अफ्रीका और स्वीडन सहित कई देशों को भारत ने 'मेक इन इंडिया' रक्षा उत्पादों का निर्यात भी किया है। भारत में बेहतर हुए व्यवसाय परिवेश से दक्षिण कोरियाई कंपनियां अपनी उच्च-स्तरीय तकनीकों के साथ भारत में भी अपना आधार बना सकती हैं। भारत में लेबर की बहुलता और भारत सरकार की विभिन्न नीतिगत पहलों से निवेश प्रक्रिया काफी आसान हो गई है।

ऑटोमोटिव क्षेत्र: भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा पैसेंजर कार बाजार है और आने वाले वर्षों में इसके दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा कार बाज़ार बनने की उम्मीद है। 'मेक इन इंडिया' नीति के अंतर्गत भारत में विनिर्माण करने वाली विदेशी कंपनियों को प्रोत्साहन और देश में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ाने पर जोर देने से, ऑटोमोबाइल क्षेत्र दक्षिण कोरियाई कंपनियों के लिए आकर्षक बन पड़ा है। उन कंपनियों के लिए अन्य के साथ-साथ लिथियम बैटरी, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसे क्षेत्रों में निवेश करने के विभिन्न अवसर हैं।

इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र: भारतीय इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग की वृद्धि के प्रमुख कारकों में मध्यम वर्गीय आबादी बढ़ना, डिस्पोजेबल आय में वृद्धि, इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं की कीमतों में गिरावट और हाई-एंड टेक्नोलॉजी को अपनाना शामिल है। वैश्विक इलेक्ट्रॉनिक बाजार और उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी में दक्षिण कोरियाई कंपनियों का वर्चस्व है और वे भारत में, खासकर घरेलू आपूर्ति-श्रृंखला प्रक्रिया में निवेश कर सकती हैं।

एयरोस्पेस क्षेत्र: बढ़ते कामगार वर्ग और बड़े होते मध्यम वर्ग के चलते नागरिक उड्डयन क्षेत्र में मांग बढ़ने की उम्मीद है। भारतीय नागरिक उड्डयन क्षेत्र में तेजी से वृद्धि के चलते नागरिक उड्डयन के मौजूदा बुनियादी ढांचे पर भारी दबाव पड़ा है। इस प्रकार, भारत में नागरिक उड्डयन संबंधी बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण करने के लिए दक्षिण कोरियाई कंपनियों के साथ सहयोग के व्यापक अवसर विद्यमान हैं। सॉफ्टवेयर क्षेत्र में भारत खुद को वैश्विक स्तर पर एक पावर हाउस के रूप में स्थापित कर चुका है और हार्डवेयर में विश्व स्तर पर दक्षिण कोरिया बड़ा प्रतिस्पर्धी है। दक्षिण कोरिया का लक्ष्य निकट भविष्य में अंतरिक्ष विकास के लिए तकनीकी क्षमताओं में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और अंतरिक्ष उद्योग के शीर्ष दस देशों की फेहरिस्त में शामिल होना है। भारत ने कई सफल अंतरिक्ष अभियान किए हैं और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी क्षेत्र में एक प्रमुख देश है। इसे देखते हुए दुनिया के अन्य देश अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में पारस्परिक रूप से लाभप्रद सहयोग के लिए आगे आ सकते हैं।

बुनियादी ढांचे का विकास: दक्षिण कोरिया भारत में स्मार्ट सिटी, सागर माला और औद्योगिक कॉरिडोर परियोजनाओं जैसी फ्लैगशिप पहलों में सहभागी है। एशियाई विकास बैंक के अनुसार, भारत को बेहतर आर्थिक विकास के लिए मजबूत इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित करने के लिए 2040 तक लगभग 4.5 ट्रिलियन यूएस डॉलर के निवेश की आवश्यकता है। दक्षिण कोरिया के पास सड़क, रेलवे, शहरी अपशिष्ट प्रबंधन और उपचार तथा शिक्षा सहित भारत के बुनियादी ढांचे में निवेश के लिए भरपूर अवसर हैं।

दक्षिण कोरिया में भारतीय निवेशों के लिए संभावित क्षेत्र

दक्षिण कोरिया एशिया में सबसे अधिक भरोसेमंद और वाइब्रेंट अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारत स्थिरता, तीव्र विकास दरों, मजबूत विनिर्माण आधार, निर्यात उन्मुखीकरण और उन्नत प्रौद्योगिकी की उपलब्धता के चलते आकर्षक निवेश स्थल है।

आईटी सेवा उद्योग: दक्षिण कोरिया में किसी भारतीय आईटी स्टार्ट-अप को बड़े घरेलू बाज़ार और स्टार्ट-अप बूम का लाभ मिल सकता है। दक्षिण कोरियाई लोग गेमिंग और सोशल नेटवर्किंग के लिए मोबाइल उपकरणों के सक्रिय उपयोगकर्ता हैं और उन्होंने कृत्रिम दक्षिण कोरियाई बुद्धिमत्ता को अपनाना शुरू कर दिया है। सॉफ्टवेयर में अग्रणी भारत, दक्षिण कोरियाई कंपनियों के साथ मिलकर दुनिया को चौथी औद्योगिक क्रांति और 5जी तथा इंटरनेट ऑफ थिंग्स को अपनाने की ओर ले जा सकता है।

रचनात्मक उद्योग: दक्षिण कोरियाई लोग डिजिटल मीडिया के प्रमुख उपभोक्ता हैं और अपने अधिकांश बैंडविड्थ संसाधनों का उपयोग ऑनलाइन गेमिंग के लिए करते हैं। इस उद्योग का फोकस मोबाइल गेम्स और वीआर तकनीक की ओर हो रहा है। देश में डिजिटल कंटेंट क्षेत्र (फिल्में, रिकॉर्डिंग और वेबटून) की भी भारी मांग है। भारत अपने सशक्त मीडिया और मनोरंजन उद्योग के जरिए डिजिटल कंटेंट क्षेत्र में निवेश कर बड़ा प्रभाव डाल सकता है।

फार्मासूटिकल क्षेत्र: दक्षिण कोरिया अगले पांच वर्षों में अपने बायोटेक और बायोफार्मासूटिकल क्षेत्रों में 1.7 बिलियन यूएस डॉलर से अधिक का निवेश करने की योजना बना रहा है और इसका उद्देश्य खुद को अनुसंधान एवं विकास पर अधिक निवेश कर वैश्विक बायोटेक और चिकित्सा उद्योग केंद्र के रूप में स्थापित करना है। भारत जेनरिक दवाओं के उत्पादन सहित फार्मासूटिकल और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में दक्षिण कोरिया में अपनी उपस्थिति बढ़ाने पर विचार कर सकता है।

ऊर्जा क्षेत्र: दक्षिण कोरिया विनिर्माण केंद्रित अर्थव्यवस्था है। इसलिए इसे भारी मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इसे अपनी अधिकांश ऊर्जा आवश्यकताओं पूरा करने के लिए आयात करना पड़ता है। दिसंबर 2017 में, दक्षिण कोरिया ने 'अक्षय 2030' की घोषणा की थी। यह सौर और पवन ऊर्जा क्षेत्रों सहित अपनी अक्षय ऊर्जा क्षमता को बढ़ाने की योजना है। अक्षय ऊर्जा क्षेत्र की भारतीय कंपनियां दक्षिण कोरियाई कंपनियों के साथ विशेष रूप से अपतटीय (ऑफशोर) पवन ऊर्जा क्षेत्र में सहभागिता कर सकती हैं। ■

पैकेजिंग क्षेत्र: संभाव्यता एवं आगे की राह

पैकेजिंग उद्योग आज बेहद महत्त्वपूर्ण है और वस्तुओं के अंतरराष्ट्रीय व्यापार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि इसका उपयोग भोजन और पेय पदार्थों से लेकर, स्वास्थ्य सेवा, सौंदर्य प्रसाधनों और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं जैसे क्षेत्रों में किया जाता है। 2018 में वैश्विक पैकेजिंग बाजार 876 बिलियन यूएस डॉलर का था, जो 2017 की तुलना में 2.9% से अधिक की वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि करते हुए 2018 में 851 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया[1]। उद्योग के सूत्रों के अनुसार, उम्मीद की जा रही है कि ई-कॉमर्स में लगातार वृद्धि के चलते 2022 की पहली छमाही तक पैकेजिंग उद्योग 1000 बिलियन यूएस डॉलर के आंकड़े को पार कर लेगा।

भारत पैकेजिंग सामग्री का निवल निर्यातक है। 2018-19 में भारत से 843.8 मिलियन यूएस डॉलर की पैकेजिंग सामग्री का निर्यात हुआ, जो पिछले वर्ष के 737.4 मिलियन यूएस डॉलर के निर्यात से 14.1% ज्यादा रहा। हालांकि, पैकेजिंग सामग्री के वैश्विक निर्यात में भारत का हिस्सा 2018 में 1.4% के साथ न्यून रहा। तथापि, भारत से पैकेजिंग सामग्री के कुल निर्यात में 19.2% की हिस्सेदारी के साथ, 2018 में, यूएसए भारतीय पैकेजिंग उद्योग के लिए प्रमुख निर्यात गंतव्य रहा। भारत से पैकेजिंग सामग्री के अन्य प्रमुख निर्यात स्थलों में यूके (8.3%), यूएई (5.2%), नीदरलैंड (3.8%) और जर्मनी (3%) शामिल हैं।

हालांकि कुल वैश्विक निर्यातों में कम हिस्सेदारी के साथ भारत पैकेजिंग के फ्लेक्सिबल इंटरमीडिएट बल्क कंटेनर (एफआईबीसी) और बाइएक्सिअली-ओरिएंटेड पॉलीथीलीन टेरेफ्थलेट (बीओपीईटी) फिल्मों जैसे उप खंडों में प्रमुख बाज़ार के रूप में उभरा है। एफआईबीसी उपखंड में चीन के बाद भारत दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक है और 114 देशों को एफआईबीसी का निर्यात करता है। तीन बड़ी भारतीय बीओपीईटी फिल्म कंपनियां इस उद्योग के शीर्ष 10 वैश्विक निर्यातकों में शामिल हैं और अपने बीओपीईटी उप-क्षेत्रों में बाजार में अग्रणी हैं।

मात्रा की दृष्टि से, भारत में प्रति व्यक्ति पैकेजिंग उपभोग अन्य देशों यानी संयुक्त राज्य अमेरिका (109 किग्रा), यूरोप (65 किग्रा), चीन (45 किग्रा), जर्मनी (42 किग्रा), ब्राजील (32 किग्रा) और ताइवान (19 किग्रा) जैसे देशों की तुलना में बहुत कम यानी सिर्फ 10.5 किलोग्राम है। उपभोग का यह न्यून स्तर भारत में पैकेजिंग क्षेत्र में अप्रयुक्त क्षमता को दर्शाता है।

पैकेजिंग क्षेत्र को प्रौद्योगिकी, कच्चे माल की लागत, कुशल श्रमशक्ति की उपलब्धता, उन्नत पैकेजिंग मशीनरी और अनुसंधान और विकास के लिए निवेश जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों के बावजूद, तेजी से बढ़ते ई-कॉमर्स, संगठित रिटेलिंग और सुविधा संचालित उपभोक्तावाद के साथ, इस क्षेत्र के बढ़ने की काफी संभावनाएं हैं, बशर्ते कि यह क्षेत्र बाजारों में अपनी पकड़ मजबूत बनाने के लिए प्रभावी ढंग से इसका लाभ उठा सके और ठोस प्रयासों के माध्यम से परिचालन के विभिन्न क्षेत्रों में बाधाओं को दूर कर सके।

[1] पैकेजिंग सामग्री में DGCIS द्वारा पैकेजिंग सामग्री की संरचना के अनुसार HS 392310, HS 392321, HS 392329, HS 392330, HS 392350, HS 392390 शामिल हैं और शब्द का आगे उपयोग उल्लिखित कोड के लिए लागू होगा।

आगे की राह

नीतिगत फ्रेमवर्क और सरकारी पहलें

- इस क्षेत्र के लिए पैकेज विनिर्माण और पैकेजिंग सेवाएं दो संभावित खंड हैं। उचित नीतियों एवं निवेश के जरिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों में पारंपरिक पैकेजिंग निर्माण इकाइयां विकसित करना।
- विभिन्न विनिर्माण केंद्रों में पैकेजिंग पार्क स्थापित करने में सार्वजनिक निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करने से एमएसएमई को उन्नत बनाने और उत्पादकता को बढ़ाने में मदद मिल सकती है।
- इसमें स्किल इंडिया कार्यक्रम की पैकेजिंग शिक्षा भी शामिल है।

तकनीकी परिवर्तनों के उपाय करना

- प्रौद्योगिकी विकास को अंतिम उत्पाद की गुणवत्ता, इसकी कमियों को दूर करने और लागत प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए।

कच्चे माल और नवाचार की लागत को कम करना

- सभी चरणों में लागत को कम करने के लिए उचित भार के साथ पैकेजिंग के लिए एक लागत सूचकांक तैयार करना।

पैकेजिंग मशीनरी क्षेत्र को सुदृढ़ करना

- भारतीय पूंजीगत वस्तु उद्योग को प्रमुख रूप से अनुसंधान एवं विकास आधारित प्रौद्योगिकी, कुशल श्रम शक्ति, उत्पादन क्षमता, तीव्र एवं गुणवत्ता पूर्ण तीव्र उत्पादन एवं इसकी जांच क्षमता, इनकी बिक्री को बढ़ाने एवं सेवाओं में सुधार लाने हेतु निवेश के मामले में उल्लेखनीय रूप से उन्नत बनाने की जरूरत है।

कुशल श्रमशक्ति की उपलब्धता को बढ़ाना

- पैकेजिंग क्षेत्र में डिग्री एवं डिप्लोमा प्रदान करने वाले पैकेजिंग प्रशिक्षण और अनुसंधान एवं विकास संस्थानों को बढ़ाना।
- मौजूदा प्रशिक्षण इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करना।

पैकेजिंग में खाद्य सुरक्षा विनियमों का अनुपालन

- अंतरराष्ट्रीय बाजार में खाद्य सुरक्षा नियमों के बारे में विशेष रूप से एमएसएमई और अन्य असंगठित और अनौपचारिक वर्गों के बीच उत्पादकों के बीच जागरूकता लाएं।

पैकेजिंग डिजाइन और नवाचार

- पैकेजिंग में बाजार आधारित अनुसंधान एवं विकास तथा उत्पाद विशिष्ट डिज़ाइन विकसित करना।
- एमएसएमई और अनौपचारिक क्षेत्र के डिजाइन क्षमताओं में सुधार आया है, किन्तु अनुसंधान एवं विकास के बुनियादी ढांचे का अभाव है।

प्रमाणीकरण बहुलता और जटिलताएं

- एक सहभागितापूर्ण दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए, जिसमें राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास संस्थाएं अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन एजेंसियों से आधिकारिक रूप से मान्यता लें। एकल प्रमाणन कार्यक्रम समय बचाने में मदद कर सकता है तथा इससे निर्यात ऑर्डरों को समय पर पूरा करने में मदद मिल सकती है। ■

केरल से निर्यात संवर्धनः चिंतन एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य

तटीय राज्य केरल रणनीतिक रूप से अंतरराष्ट्रीय व्यापार सीमा पर स्थित है। यद्यपि यह राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से अपेक्षाकृत छोटा है, लेकिन इसमें भारत के निर्यातों को बढ़ाने वाले प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में उभरने की संभावनाएं हैं। इंडिया एक्ज़िम बैंक द्वारा हाल ही में किए गए केरल से निर्यात संवर्धनः चिंतन एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य विषयक शोध अध्ययन के अनुसार, वर्ष 2024–25 तक केरल 3.67 ट्रिलियन तक के निर्यात लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। इस तरह भारत के निर्यातों में इस राज्य की हिस्सेदारी वर्तमान की 2.2% से बढ़कर करीब 4.5% हो जाएगी। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक सर्वव्यापी और सुनियोजित निर्यात विकास रणनीति की आवश्यकता होगी।

केरल से निर्यात को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियाँ

फोकस उत्पाद और बाजार: पारंपरिक रूप से मजबूती वाले क्षेत्र निर्यात की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बने रहेंगे। किन्तु राज्य के निर्यातों को जरूरी लचीलापन प्रदान करने के लिए उच्च मूल्य वर्धित उत्पादों के निर्यातों में विविधता लाने की आवश्यकता है। अल्पावधि से मध्यम अवधि में, निर्यात रणनीति में समुद्री उत्पाद, चाय और मसाले, इलेक्ट्रिक मशीनरी और उपकरण, रासायनिक उत्पाद, जवाहरात और धातु जैसे उत्पाद चैंपियन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, जहां राज्य तुलनात्मक रूप से लाभ की स्थिति में है। मध्यम अवधि से दीर्घावधि में राज्य को मेडिकल एप्लायंस और उपकरणों तथा टर्बो जेट जैसे क्षेत्रों में क्षमता विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, क्योंकि वर्तमान में केरल को इन क्षेत्रों में तुलनात्मक लाभ प्राप्त नहीं है, लेकिन इनकी वैश्विक आयात मांग बढ़ रही है।

बुनियादी ढांचे का सदुपयोग और सुदृढ़ीकरण: राज्य में मौजूदा निर्यात बुनियादी ढांचे को उन्नत करने की आवश्यकता है। इसके लिए जलमार्गों के मौजूदा नेटवर्क को सुदृढ़ करने के लिए सार्वजनिक–निजी साझेदारी मॉडल को अपनाने, सामान्य (गैर–प्रमुख) बंदरगाहों पर निर्यात बुनियादी ढांचे के विकास के लिए एक अलग कोष बनाने, आलप्पुझा और पलक्कड़ जिलों में भंडारण क्षमता बढ़ाने और राज्य में एवीजीसी क्षेत्र के लिए उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने जैसे उपाय किए जा सकते हैं।

क्षमता निर्माण: केरल को उन उत्पादों के लिए एक ब्रांडिंग रणनीति विकसित करने की आवश्यकता है जिनके लिए राज्य के पास भौगोलिक विशिष्टता (जीआई) है, ताकि जीआई ब्रांड के तहत बेचे जाने वाले सभी उत्पादों के न्यूनतम विशिष्ट मानकों का पालन सुनिश्चित किया जा सके। इसके अलावा, केरल अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रवेश के लिए वैधानिक प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए राज्य में निर्यातकों द्वारा किए गए व्ययों की प्रतिपूर्ति कर सहायता प्रदान करने पर भी विचार कर सकता है।

राजकोषीय प्रोत्साहन: केरल से निर्यात स्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए राज्य सरकार प्राथमिक क्षेत्रों में पूंजीगत सब्सिडी या अनुदान प्रदान करने पर विचार कर सकती है। राज्य सरकार प्रमुख निर्यात उन्मुख क्षेत्रों, विशेष रूप से उत्पाद चैंपियन क्षेत्रों में बिजली शुल्क की प्रतिपूर्ति करने पर भी विचार कर सकती है।

निर्यात संवर्धन अभियान: केरल को अपने निर्यात संवर्धन अभियान को लगातार बढ़ाने की आवश्यकता है। हथकरघा क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों के लिए मौजूदा पुरस्कार कार्यक्रम के अलावा, केरल अन्य प्रमुख क्षेत्रों में निर्यात पुरस्कार स्थापित करने पर भी विचार कर सकता है। राज्य सरकार के निर्यात संवर्धन अभियानों में राज्य के विभिन्न औद्योगिक समूहों पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस संदर्भ में, मौजूदा क्लस्टरों के मूल्यांकन के लिए एक तंत्र विकसित किया जा सकता है। क्लस्टरों का आकलन कर राज्य सरकार द्वारा प्रासंगिक क्षमता निर्माण गतिविधियां आयोजित की जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त, राज्य से निकलने वाले उत्पादों के लिए वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी ब्रांडों के निर्माण के लिए राज्य सरकार द्वारा एक ब्रांड इक्विटी फंड भी स्थापित किया जा सकता है।

संस्थागत स्ट्रीमिंग: केरल में समग्र संस्थागत व्यवस्था इस तरह बनाने की आवश्यकता है, जिससे निर्यातों के लिए प्रस्तावित विभिन्न योजनाएं सुगम बनाई जा सकें, प्रस्तावित लक्ष्यों की नियमित निगरानी की जा सके और इस तरह राज्य से उच्च निर्यातों के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इसके लिए, केरल सरकार निर्यातकों और उद्योग संगठनों की भागीदारी के साथ केरल निर्यात संवर्धन परिषद (केईपीसी) की स्थापना करने पर विचार कर सकती है, ताकि राज्य से बेहतर निर्यात सुनिश्चित किया जा सके।

एक्ज़िम बैंक के शोध अध्ययन 'केरल से निर्यात संवर्धनः चिंतन एवं नीतिगत परिप्रेक्ष्य' का विमोचन'

इस शोध अध्ययन का विमोचन 14 अगस्त, 2020 को आयोजित चर्चापरक वेबिनार 'केरल से निर्यात बढ़ाने की संभावनाएं' के दौरान केरल सरकार के उद्योग एवं वाणिज्य विभाग तथा नोरका के मुख्य सचिव डॉ. के. एलैंगोवन (आईएएस), द्वारा किया गया। ■

भारतीय रसायन उद्योग: नई दिशाएं

रसायन उद्योग आधुनिक वैश्वीकृत विश्व अर्थव्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण घटक रहा है। इसमें कच्चे तेल, प्राकृतिक गैस, हवा, पानी, धातु और खनिज पदार्थों इत्यादि को तैयार कर उन्हें विविध उत्पादों के रूप में ढाला जाता है। यह उद्योग उर्वरकों, कीटनाशकों, एलईडी लाइटों और अन्य कृषि रसायन उत्पादों जैसे तैयार उत्पादों की बड़ी रेंज उपलब्ध कराता है। इसके साथ ही यह उद्योग सिंथेटिक, फाइबर और प्लास्टिक एवं जल रसायन जैसी अन्य विनिर्माण गतिविधियों के लिए भी प्रमुख सामग्री का उत्पादन करता है, जो दुनियाभर में लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मददगार हैं। हालांकि रसायन उद्योग बड़ा विविधतापूर्ण है। इसमें कमोडिटी रसायनों से लेकर अनुसंधानपरक उत्पाद तक शामिल हैं। उद्योग आपूर्ति श्रृंखला के आधार पर इसे तीन मुख्य खंडों में वर्गीकृत किया जा सकता है – आधारभूत रसायन, विशिष्ट रसायन और ज्ञान–आधारित रसायन।

वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो रसायन उद्योग केवल आकार ही नहीं, बल्कि विशेषताओं के मामले में भी महत्त्वपूर्ण है। इसमें महत्त्वपूर्ण पूंजी निवेश, उच्च ज्ञान सामग्री और योग्य मानव संसाधन शामिल हैं। मोटे तौर पर देखा जाए, तो इस उद्योग में आधारभूत रसायन क्षेत्र की हिस्सेदारी लगभग 47%, विशिष्ट रसायनों की हिस्सेदारी 25% और ज्ञान–आधारित रसायनों की हिस्सेदारी 28% है। ध्यातव्य है कि यह उद्योग बड़ी संख्या में रोजगार देता है। लगभग 15 मिलियन लोग सीधे रसायन उद्योग में कार्यरत हैं। इसके अलावा, उद्योग की आपूर्ति–श्रृंखला पर होने वाले व्यय से भी रोजगार के बहुत अवसर उत्पन्न होते हैं। 2017 में रसायन कंपनियों द्वारा माल और सेवाओं की खरीद के जरिए लगभग 60 मिलियन नौकरियों का सृजन हुआ। इनमें से तीन–चौथाई नौकरियां अकेले एशिया–प्रशांत में थी।

पिछले कुछ वर्षों में, इस उद्योग को मूल्य श्रृंखला के विभिन्न स्तरों पर उभरते बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं से अच्छी भागीदारी मिली है। 2018 में वैश्विक रसायन बिक्री में ब्रिक देशों (ब्राजील, रूस, भारत और चीन) की 42.8% हिस्सेदारी रही। 2018 में, वैश्विक रसायन बिक्री में ब्रिक, ईयू और यूएसए लगभग 75% के हिस्सेदार रहे।

ध्यातव्य है कि रसायन उद्योग आजकल टेक्सटाइल्स, फार्मासूटिकल्स, उर्वरक, खाद्य प्रसंस्करण और पेंट जैसे लगभग अन्य सभी विनिर्माण उद्योगों के लिए बुनियादी ब्लॉक के रूप में कार्य करता है। इसके उत्पाद दैनिक उपयोग की हर वस्तुओं तक पहुंच गए हैं और जीवन के लगभग हर क्षेत्र में अपनी पैठ बना चुके हैं। शुद्ध मूल्यों में निवेश देखा जाए, तो रसायन क्षेत्र में विश्व निवेश का स्तर 2008 की तुलना में 1.8% बढ़कर 2018 में 214 बिलियन यूएस डॉलर का हो गया। इस अवधि के दौरान, वैश्विक निवेश प्रति वर्ष औसतन 6% बढ़ा, जो इसी अवधि के दौरान हुई 10.6% की चीनी निवेश वृद्धि की तुलना में काफी कम है।

भारत में, रसायन उद्योग सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक बन गया है। भारत का रसायन उद्योग एशिया में तीसरे और दुनिया में छठे स्थान पर है। इस क्रम में यूएसए, चीन, जर्मनी, जापान और दक्षिण कोरिया का स्थान भारत से पहले आता है। सभी निर्मित उत्पाद 95% से अधिक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रसायन उद्योग से जुड़े हैं। भारतीय रसायन उद्योग में वृद्धि मुख्य रूप से देश की बढ़ती खपत के कारण हो रही है। भारत में रसायनों की प्रति व्यक्ति खपत वैश्विक खपत का औसतन दसवां हिस्सा है। इसके बावजूद अन्य विकासशील देशों की तुलना में भारतीय रसायन खपत काफी कम है। इस तरह यह निवेश वृद्धि और निर्यात के लिए एक बेहतरीन गंतव्य है।

इस उद्योग ने जहां पिछले दो दशकों में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की है, वहां यह भी उल्लेखनीय है कि एफएमसीजी क्षेत्र में हुई वृद्धि के परिणामस्वरूप ही इस क्षेत्र में वृद्धि हुई है। तथापि, एक अति प्रतिस्पर्द्धी बाजार और न्यून वृद्धि वाले दौर में लाभप्रद वृद्धि हासिल कर पाना आज एक बड़ी चुनौती बन गई है। वैश्विक संदर्भ में देखा जाए, तो यह उद्योग प्रमुख उपभोक्ता उद्योगों (जैसे–मोटर वाहन, इलेक्ट्रॉनिक्स इत्यादि) के अनुरूप वृद्धिशील रूप से आगे की ओर बढ़ रहा है, ताकि इसमें बेहतर विनिर्माण प्रतिस्पर्धा का लाभ उठाया जा सके।

उपयोगकर्ता उद्योगों के लिए प्रति व्यक्ति कम खपत और कम प्रसार स्तर के परिणामस्वरूप भारत में रसायनों की प्रति व्यक्ति खपत कम है, पर इसी कम खपत में भविष्य में रसायन कंपनियों के बड़े अवसर भी छिपे हैं, जिन्हें अभी तक भुनाया नहीं जा सका है। 2018 में, भारत में रसायन उद्योग की प्रति व्यक्ति खपत 100 यूएस डॉलर थी, जो विश्व औसत का सिर्फ दसवां हिस्सा था, इससे पता चलता है कि संभावित मांग के अनुरूप उत्पादन अभी बाकी है।

कुल रसायन आयातों में 7.7% की एएजीआर दर्ज की गई। इसमें प्रौद्योगिकी विकास और तकनीकी जानकारियां बढ़ाते हुए किफायती परिचालन में इन आयातों के विकल्प तैयार करने के अवसर छिपे हैं। यह अनुशंसा की गई है कि रसायन उद्योग संबंधी उद्यमों / नवाचारों में निवेश करने के लिए रसायन क्षेत्र को कुल राष्ट्रीय समावेशी नवाचार निधि का कम से कम 10% हिस्सा मिलना चाहिए।

सामान्य व्यावसायिक परिदृश्य के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2025 तक रसायन निर्यात 55.55 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंचने की संभावना है। इसके लिए यह जरूरी है कि वित्तीय वर्ष 2019 से 2025 के दौरान यह 4.08% की सीएजीआर से बढ़े। वहीं सकारात्मक परिदृश्य के तहत, यदि सरकार द्वारा निर्धारित 9% क्षेत्रवार वृद्धि के लक्ष्य को हासिल कर लिया जाता है तो इसी अवधि के दौरान वित्तीय वर्ष 2025 तक रसायन निर्यात 73.29 बिलियन यूएस डॉलर तक पहुंच जाएंगे।

वित्तीय वर्ष 2025 तक भारत से 1 ट्रिलियन यूएस डॉलर के कुल निर्यातों के लक्ष्य को हासिल करने और रसायन क्षेत्र में घरेलू स्तर पर वृद्धि जारी रखने के लिए निम्नलिखित कुछ बिंदुओं पर काम किया जा सकता है।

नए बाजारों में पहुँच बनाना

अग्रणी रसायन निर्माता संयुक्त उद्यमों या अधिग्रहणों के माध्यम से मुख्य रूप से मध्य पूर्व में फीडस्टॉक तक पहुंच बनाने और चीन व भारत में स्थानीय बाजार में उपस्थिति बनाने के लिए बाजारों में प्रवेश कर रहे हैं। सबसे सफल रसायन उत्पादक वे होंगे, जो वैश्विक रसायन उद्योग में बदलते डायनैमिक्स के मुताबिक ढल जाएंगे और उभरते बाजारों में खुद को प्रभावी तरीके से स्थापित कर सकेंगे।

क्षेत्रीय विषमताओं पर विचार करना भी महत्त्वपूर्ण है। किसी एक क्षेत्र में खूब उपयोग किए जा रहे उत्पाद किसी दूसरे क्षेत्र के लिए एकदम नए भी हो सकते हैं। साथ ही, किसी नए व्यापार मॉडल, पैकेजिंग या डिलीवरी पद्धति को अपनाने की आवश्यकता भी हो सकती है। जैसे किसी निर्धारित क्षेत्र में किसी उत्पाद को सफलतापूर्वक स्थापित कराने के लिए यह जरूरी है कि ग्राहकों के साथ अच्छे संबंध बनाकर उस उत्पाद के लिए उनकी रुचि का पता लगाया जाए।

भारतीय रसायन उद्योग मुख्य रूप से घरेलू बाजारों तक ही सीमित है। किन्तु इसके लिए विदेश में अच्छे अवसर हैं, जिन्हें भुनाने की जरूरत है और यह काम विदेशों में अधिग्रहण करने वाली कंपनियों या ग्रीनफील्ड परियोजनाओं के माध्यम से एक निश्चित अवधि प्रदान कर कराया जा सकता है। इसके लिए बेहतर नेटवर्क, चैनल बिक्री फोर्स, व्यापार सहयोगी, असाइनमेंट-आधारित एजेंट बनाना और विभिन्न क्षेत्रों में मार्केटिंग बढ़ाना भी अन्य विकल्प हो सकते हैं।

वैश्विक मूल्य श्रृंखला (जीवीसी) में बेहतर एकीकरण की आवश्यकता

भारतीय और चीनी संदर्भ में रसायन क्षेत्र में फॉरवार्ड और बैकवार्ड लिंकेज का विश्लेषण करते हुए यह देखा गया है कि भारत रसायन और दवा उद्योग में उपयोग की जाने वाली कुछ महत्त्वपूर्ण सामग्रियों के लिए चीन पर बड़े पैमाने पर निर्भर (बैकवार्ड लिंकेज) है।

2009-18 के दौरान, भारत द्वारा शेष विश्व से रसायनों का आयात जहां 11.1% की एएजीआर से बढ़ा, वहीं चीन से इसका आयात 13.7% की एएजीआर से बढ़ा। इस तरह 2018 में भारत के कुल रसायन आयातों में चीन से आयात का हिस्सा लगभग 46% रहा। यह अनुशंसा की गई है कि चीन से आयात निर्भरता कम करने और भारत से रसायन निर्यात बढ़ाने के लिए जीवीसी में भारत का एकीकरण बढ़ाने पर फोकस किया जाना चाहिए, जिससे घरेलू निर्माताओं को उत्पादन के हर चरण में विशेषज्ञता प्राप्त हो सके।

क्षमता बढ़ाकर आयात कम करना

ध्यातव्य है कि रसायनों के आयात के लिए चीन पर भारत की भारी निर्भरता भारत के घरेलू बाजारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है, भले ही इसकी कीमतें थोड़ी बढ़ जाएं। ये रसायन फार्मासूटिकल और विनिर्माण दोनों ही क्षेत्रों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। अतः इस क्षेत्र में आयात प्रतिस्थापन करना न केवल भारत को स्वदेशी रसायन विनिर्माण में आत्मनिर्भर बनाने के लिए जरूरी है, बल्कि इस क्षेत्र को वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए भी महत्त्वपूर्ण है।

रसायन उद्योग में लघु और मध्यम उद्यमों के लिए कोष

भारत का रसायन उद्योग देश के सबसे बड़े और सबसे विविध उद्योगों में से एक है। इसमें कई छोटे उद्योग शामिल हैं जो सैकड़ों क्षेत्रों को कवर करते हैं। किन्तु, धन की कमी के कारण वे खुद को अपग्रेड करने में असमर्थ हैं। वे न केवल तकनीकी बाधाओं, बल्कि कुशल श्रमशक्ति के अभाव में भी चुनौतियों का सामना करते हैं। विदेशों में उल्लेखनीय बाजार संभावनाएं हैं और इन लघु व मध्यम उद्यमों को उन विदेशी बाजारों में अवसरों का फायदा उठाने के लिए वैल्यू चेन में आगे बढ़ने और विदेशों में प्रचलित विभिन्न नियमों, विनियमों और व्यावहारिक पद्धतियों का अनुपालन करने की आवश्यकता है।

टेक्सटाइल उद्योग के लिए प्रौद्योगिकी उन्नयन कोष की तर्ज पर सरकार द्वारा रसायन क्षेत्र के लिए भी एक अलग कोष बनाया जा सकता है, या सौर ऊर्जा क्षेत्र के लिए उपलब्ध त्वरित मूल्यह्रास के प्रावधान की तरह कोई प्रावधान किया जा सकता है। इस कोष का उपयोग डिजाइन, पेटेंट, प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकी को सुलभ बनाने के लिए भी किया जा सकता है। इस तरह की पहल से उद्योग विशेषकर लघु एवं मध्यम उद्यम अधिक मजबूत और आत्मनिर्भर बनेंगे।

निवेश

भारतीय रसायन उद्योग में दो मोर्चों पर निवेश अधिक महत्त्वपूर्ण होगा – प्रौद्योगिकी और नवाचार। रसायन उद्योग द्वारा तकनीकी विकास दो स्तरों पर प्राप्त किया जा सकता है। थोक उत्पादों के क्षेत्र में रसायन उद्योग को उत्पादन लागत में कमी लाने लिए प्रक्रियागत नवाचार करना चाहिए।

इसके अलावा, रसायन उद्योग को तकनीकी संसाधनों में निवेश करने की आवश्यकता है, जो विशिष्ट उत्पाद विकास को बढ़ावा देगा। उदारीकरण ने किसी अर्थव्यवस्था में एकीकरण के रूप में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के जरिए विकसित देशों से प्रौद्योगिकी और प्रबंधन पद्धतियों के अंतर-फर्म हस्तांतरण की संभावना पहले ही बढ़ा दी है। विशिष्ट रूप से तकनीकी मोर्चे पर, रसायन क्षेत्र में कुल अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) निवेश वित्तीय वर्ष 2019 में कुल बिक्री का 0.3% रहा। अनुसंधान और विकास गतिविधियां घरेलू बाजार में विकास को बनाए रखने के अलावा, घरेलू परिवेश में पले-बढ़े नए उद्यमियों के लिए भी वैश्विक बाजारों जितनी ही महत्त्वपूर्ण हैं। ■

व्यापार और आर्थिक विकास पर निबंध
ईरा पुरस्कार प्राप्त थीसिस पर आधारित

भारतीय निर्यात-आयात बैंक ने 1989 में अंतरराष्ट्रीय आर्थिक शोध वार्षिक (ईरा) पुरस्कार की स्थापना की। इस पुरस्कार का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय अर्थशास्त्र, व्यापार और विकास तथा संबंधित वित्तपोषण में भारतीय नागरिकों द्वारा भारत या विदेश में किसी विश्वविद्यालय या शैक्षिक संस्थान से शोध को बढ़ावा देना है। डॉ. सौमित्रो चटर्जी द्वारा लिखा गया प्रस्तुत शोध प्रबंध ''व्यापार एवं आर्थिक विकास पर निबंध'' ईरा पुरस्कार 2019 का पुरस्कृत शोध प्रबंध है। डॉ. सौमित्रो चटर्जी पेंसिलवानिया स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए के अर्थशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं।

भारत में लंबे समय से यह माना जाता रहा है कि किसानों की कम आय का एक कारण अनुत्पादक बिचौलिये होते हैं, क्योंकि वे बाजार भाव से परिचित होते हैं। आंकड़ों में पाए जाने वाले दो तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं। पहला, बुनियादी ढांचे, सड़कों और संचार लागतों में अच्छे खासे सुधार के बावजूद कृषि कमोडिटी की कीमतों में क्षेत्रवार भिन्नता में कमी नहीं आई है। इसके लिए जरूरी है कि सही प्रतिस्पर्धा के साथ एक मूल्य के कानून को गंभीरता से लिया जाए। दूसरा, आंकड़ों में कृषि कमोडिटी के थोक और खुदरा मूल्यों के बीच बड़े पैमाने पर विषमता विद्यमान है और यह बताता है कि बिचौलियों द्वारा शुल्क चार्ज किया जाता है। विभिन्न राज्यों की कृषि उपज बाजार समितियों एपीएमसी की ओर से बिचौलियों को दिए गए फसल के व्यापार को विनियमित करने का अधिकार बाजार की अक्षमताओं और बिचौलियों की बाजार शक्तियों का एक कारण माना जाता है।

इस शोध में किसान की निम्न आय से जुड़ी बहुत जटिल समस्या के एक विशेष हिस्से का अध्ययन किया गया है। यह शोध कृषि बाजार में अंतर-राज्यीय व्यापार में आने वाली बाधाओं को खत्म करने के आर्थिक परिणामों की पड़ताल करता है। इस शोधपत्र में अंतर-राज्यीय व्यापार में आने वाली बाधाओं को खत्म करने के प्रभाव के अध्ययन के लिए एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक व्यवस्था प्रस्तावित की गई है और वह है क्षेत्रीय स्पर्धा। विचार करने वाली बात यह है कि जब कई खरीदार (बिचौलिये) किसी विक्रेता (किसान) की फसल के लिए बोली लगाते हैं, तो किसान को अधिक कीमत मिलने की संभावना होती है। लेकिन खरीदार अगर कम हों तो प्रतिस्पर्धा भी कम हो जाती है और इसलिए प्रस्तावित कीमतें भी कम रह जाती हैं। यह व्यवस्था क्षेत्रीय संदर्भ में भी इसी तरह काम करती है। भारत में, अनाज का व्यापार ज्यादातर एपीएमसी बाजारों या मंडियों में होता है। दो जिले लीजिए, जिनमें से एक में दो-चार मंडियां हैं और दूसरे में कई मंडियां हैं। संभवतः, किसान को अधिक मंडियों वाले जिले में अपने उत्पाद के लिए ज्यादा कीमत मिलेगी।

शोध सबसे पहले इसी कथन को स्थापित करता है कि आँकड़ों के मामले में यह बात एकदम सही है। शोध में यह बताया गया है कि बाजार में किसी मानक वस्तु के कम हो जाने पर किसानों की आय में लगभग 3% तक की वृद्धि हो जाती है। इसके बाद शोध में कृषि उत्पादों के संबंध में अंतर-राज्य व्यापार बाधाओं को दूर करने के प्रभावों का अध्ययन किया गया है।

राज्य की सीमाओं के पास रहने वाले किसानों के लिए यह इसलिए फायदेमंद है क्योंकि इस तरह उनकी पहुंच बाहर तक हो जाती है। बिचौलियों के साथ मोलभाव करते हुए वे कह सकते हैं कि उनकी पहुंच अधिक खरीदारों तक है। इस प्रकार, किसान अपने उत्पाद को बेचने के लिए सबसे पहले अपने राज्य के नजदीकी खरीदार को ही देखेगा और इस तरह किसानों के लिए कीमतों में वृद्धि की उम्मीद होगी। तथापि, एक बार राज्य की सीमाओं के पास की मंडियों में कीमतें बढ़ जाएं, तो सीमाओं से थोड़ी दूर मंडियों में मोलभाव करने वाले किसानों के पास भी अधिक विकल्प आ जाते हैं। इस प्रकार, लगभग अंतरराज्यीय लेनदेन की प्रक्रिया के माध्यम से और अंतरराज्यीय बाधाओं को दूर करने से राज्यों की आंतरिक मंडियों में भी कीमतें बढ़ सकती हैं। हालांकि, परिमाण छोटा हो सकता है क्योंकि इस लेनदेन में परिवहन की लागत से छूट मिलती है। शोध में पाया गया है कि एक मानक विचलन के कारण क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा बढ़ने से किसानों को मिलने वाली कीमतों में लगभग 3% की वृद्धि होती है।

किसानों को बेहतर कीमत मिल जाए तो वे बीज, उर्वरक, कीटनाशकों जैसी बेहतर वस्तुओं का उपयोग कर सकेंगे। इसके बाद कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी, जिससे आय में भी बढ़ोतरी होगी। हालांकि, एक बार अर्थव्यवस्था में कृषि उत्पादन की आपूर्ति बढ़ जाए, तो यह खुदरा कीमतों को कम कर देती है, जिससे कृषि में होने वाली समग्र बचत कम हो जाती है। ऐसा होने पर, किसान की आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

मॉडल के क्वांटिटेटिव अनुमान बताते हैं कि अंतर-राज्य व्यापार प्रतिबंधों को हटाने से किसानों को मिलने वाली उनकी फसल की कीमत में औसतन लगभग 11% की वृद्धि हो सकती है। इस मूल्य वृद्धि से किसानों की उत्पादकता में सुधार को बढ़ावा मिलेगा क्योंकि किसान बीज और उर्वरक जैसी बेहतर सामग्रियों में निवेश कर सकेंगे। औसत फसल उत्पादन औसतन 9% तक बढ़ सकता है। इसलिए राष्ट्रीय फसल उत्पादन का मूल्य कम से कम 18% बढ़ जाएगा। मॉडल के अनुमानों के मुताबिक समग्र लाभ की तुलना में, ऋणात्मक प्रभाव बहुत कम हैं और देश में इस तरह की औसत कीमतों में भी अभी 9% की वृद्धि होगी। किसानों के एक छोटे तबके को नुकसान होगा और उसे पहले की तुलना में लगभग 10% कम कीमत मिलेगी।

उपरोक्त निष्कर्ष कुछ प्रमुख मान्यताओं के अधीन हैं, हो सकता है कि ये उतने वास्तविक न हों। इस शोध पत्र का आर्थिक मॉडल संस्थानों, ग्रामीण भारत की राजनीतिक अर्थव्यवस्था को ध्यान में रखकर लिया गया है। इसके अलावा, बढ़ी हुई उत्पादकता का अनुमान लगाने के लिए यह माना जाता है कि बीज और उर्वरक जैसे प्रमुख इनपुट केवल प्रतिस्पर्धी कीमतों पर ही प्राप्त किए जा सकते हैं। पुनः ध्यातव्य हो कि शोध की कुछ सीमाएं हैं। ■

इंडिया एक्ज़िम बैंक की ऋण-व्यवस्थाएं

इंडिया एक्ज़िम बैंक विदेशी वित्तीय संस्थाओं, क्षेत्रीय विकास बैंकों, संप्रभु सरकारों और अन्य विदेशी संस्थाओं को ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान करता है, जो उन देशों के क्रेताओं को भारत से आस्थगित भुगतान शर्तों पर विकासपरक तथा बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं, उपकरण, माल एवं सेवाओं का आयात करने में समर्थ बनाती हैं। इंडिया एक्ज़िम बैंक भारत सरकार के आदेश पर भी ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान करता है। इनके अंतर्गत एक्ज़िम बैंक माल के शिपमेंट पर भारतीय निर्यातक को कॉन्ट्रैक्ट मूल्य के 100 प्रतिशत की प्रतिपूर्ति करता है, बशर्ते कि कुल कॉन्ट्रैक्ट मूल्य के कम से कम 75 प्रतिशत के माल एवं सेवाओं का शिपमेंट भारत से किया गया हो। ऋण-व्यवस्थाओं के जरिए उभरते बाजारों में भारत की परियोजना निष्पादन क्षमता के प्रदर्शन में भी मदद मिली है। हाल के वर्षों में ऋण-व्यवस्थाओं ने गति पकड़ी है। विशेष रूप से अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशियानिया और सीआईएस क्षेत्रों में सबसे ज्यादा ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की गई हैं। बैंक द्वारा अब तक अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, ओशियानिया और सीआईएस क्षेत्रों के 61 देशों को 25.74 बिलियन यूएस डॉलर की ऋण प्रतिबद्धता के साथ 263 ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं, जो भारत से निर्यातों के वित्तपोषण के लिए उपलब्ध हैं। इस प्रकार ऋण-व्यवस्थाएं विकासशील देशों में भारत से परियोजनाओं, माल और सेवाओं के निर्यात के संवर्धन और सुगमीकरण के लिए प्रभावी साधन हैं।

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने जुलाई-सितंबर 2020 के दौरान भारत सरकार की ओर से निम्नलिखित ऋण-व्यवस्थाओं पर हस्ताक्षर किए:

मोज़ाम्बिक सरकार को 'मोज़ाम्बिक में बिजली आपूर्ति में सुधार' परियोजना के लिए 250 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की गई। उपरोक्त 250 मिलियन यूएस डॉलर के एलओसी करार पर हस्ताक्षर के साथ, एक्ज़िम बैंक द्वारा भारत सरकार की ओर से मोज़ाम्बिक सरकार को अब तक 772.44 मिलियन यूएस डॉलर की कुल 14 (चौदह) ऋण-व्यवस्थाएं प्रदान की जा चुकी हैं। ये ऋण-व्यवस्थाएं मोज़ाम्बिक सरकार को पानी की ड्रिलिंग मशीनरी, उपकरण, एसेसरीज, कंपोनेंट एवं स्पेयरों, सहायक वाहनों, पानी और ईंधन के टैंकरों और इलेक्ट्रिकल उपकरणों की आपूर्ति के लिए; गाजा प्रांत के विद्युतीकरण, पानी की ड्रिलिंग तकनीक और उपकरण के स्थानांतरण भवन निर्माण एवं इन्क्यूबेटर सुविधा सहित आईटी पार्क परियोजना, अनुसंधान एवं शिक्षण केंद्र, टेक्नोलॉजी पार्क और प्रशासनिक सुविधाओं के लिए प्रदान की गई हैं। साथ ही इनहाम्बाने, ज़ाम्बेरी और नामपुला, काबो, डेलगाडो, मनिका, निआसा राज्यों में ग्रामीण विद्युतीकरण परियोजना, चावल और गेहूँ का उत्पादन, मक्का की खेती बढ़ाने और फोटोवोल्टिक सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए संयंत्र के विनिर्माण; ग्रामीण पेयजल परियोजना के विस्तार; टीका, बुजी और नोवा सोफाला के बीच सड़क के पुनरुद्धार; 1200 मकानों के निर्माण, हैंड पम्प और 8 लघु जल प्रणालियों सहित 1600 बोरवेल के निर्माण और लोकोमोटिव, कोच, वैगनों सहित रेलवे रोलिंग स्टॉक की खरीद के लिए प्रदान की गई हैं।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:
श्री गौरव भंडारी, महाप्रबंधक,
भारतीय निर्यात-आयात बैंक,
ऑफिस ब्लॉक, टावर-1, 7वीं मंज़िल, एड्जेसेंट रिंग रोड,
किदवई नगर (पूर्व) नई दिल्ली - 110 023,
फोन: +91-11-24607700
ई- मेल: eximloc@eximbankindia.in

दास्तान-ए-कामयाबी

केन्या सरकार को प्रदत्त ऋण-व्यवस्था के अंतर्गत रिफ्ट वैली टेक्सटाइल फैक्टरी (रिवाटेक्स ईस्ट अफ्रीका लिमिटेड) का उन्नयन

एक्ज़िम बैंक द्वारा केन्या सरकार को रिफ्ट वैली टेक्सटाइल फैक्टरी (रिवाटेक्स ईस्ट अफ्रीका लिमिटेड) के उन्नयन के लिए 29.95 मिलियन यूएस डॉलर की ऋण-व्यवस्था प्रदान की गई। इसके अंतर्गत किए जाने वाले कार्यों में संयंत्र की स्थापना और उसे चालू करने के अलावा कताई और बुनाई के लिए मशीनरी और उपकरणों की आपूर्ति तथा तकनीशियनों के प्रशिक्षण और कौशल विकास के साथ-साथ विभिन्न टेक्सटाइल उत्पादों को अंतिम रूप देना भी शामिल है। रिवाटेक्स ने केन्या में कपास के उत्पादों को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण निभाई है और कंपनी अब इटली और यूएस सहित पूर्वी अफ्रीकी देशों को टेक्सटाइल निर्यात करने की तैयारी में है। घरेलू बाजार में रिवाटेक्स द्वारा सेना, पुलिस, स्कूल और अस्पतालों को रेडीमेड गारमेंट की आपूर्ति की जा रही है। कोविड-19 वैश्विक महामारी के दौरान रिवाटेक्स की सुविधाओं का उपयोग हाल ही में मास्क और पीपीई बनाने में भी किया गया। ■

तिमाही गतिविधियां

चुनिंदा विनिर्माण क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता हो तो कम हो सकते हैं 186 बिलियन यूएस डॉलर से अधिक के आयातः एक्ज़िम बैंक शोध अध्ययन

भारतीय निर्यात-आयात बैंक (इंडिया एक्ज़िम बैंक) द्वारा प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, भारत में विनिर्माण क्षेत्र में हाल में कुछ मंदी देखी गई। भारत के जीवीए में विनिर्माण क्षेत्र के योगदान में गिरावट आई है। वर्ष 2010-11 में यह 18.4 प्रतिशत था, जो वर्ष 2019-20 में 15.1 प्रतिशत रह गया। देश में निजी खपत की मांग बढ़ने के बावजूद यह गिरावट दर्ज की गई। घरेलू विनिर्माण क्षेत्र में इस कमजोरी के कारण बढ़ती घरेलू मांग को पूरा करने के लिए पिछले कुछ वर्षों में आयात पर निर्भरता और अधिक बढ़ गई।

'आत्मनिर्भर भारतः दृष्टिकोण और रणनीतिक क्षेत्र' शीर्षक वाले इस शोध अध्ययन में आयातों को कम करने के लिए कुछ चुनिंदा क्षेत्रों को चिह्नित किया गया है और इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा उपकरण, रसायन एवं संबद्ध क्षेत्र, दवाएं और चुनिंदा कृषि उत्पाद जैसे घरेलू विनिर्माण क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाने पर फोकस किया गया है। अध्ययन में ऑटो पुर्जे, लौह और इस्पात जैसे क्षेत्रों को भी शामिल किया गया है, जहां भारत के लिए कुल व्यापार अधिशेष है, तथापि कुछ उप-श्रेणियों में, विशेष रूप से चीन के साथ व्यापार घाटा है। इसके अलावा, अध्ययन में आयात के विकल्पों के रूप में दुर्लभ मृदा तत्त्वों जैसे क्षेत्र को भी शामिल किया गया है, क्योंकि हाई-टेक विनिर्माण में प्रवेश करने के लिए इन रणनीतिक खनिजों को संरक्षित करना भारत के लिए महत्त्वपूर्ण है। भारत द्वारा इन क्षेत्रों से 186 बिलियन यूएस डॉलर से अधिक का आयात किया जाता है, जिसमें भारत द्वारा कुल आयातों के लगभग 39 प्रतिशत और गैर-तेल आयातों में 50 प्रतिशत की हिस्सेदारी इसी क्षेत्र की है। यह अध्ययन 16 अगस्त, 2020 को इंडिया एक्ज़िम बैंक द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत के लिए रणनीतियां' विषय पर आयोजित एक चर्चापरक वेबिनार के दौरान जारी किया गया।

अध्ययन का विमोचन वेबिनार के मुख्य अतिथि श्री के. राजारमन द्वारा किया गया, जो वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग में अपर सचिव हैं। इस अवसर पर, श्री राजारमन ने भारत सरकार द्वारा आयात निर्भरता को कम करने और आत्मनिर्भरता के लिए किए जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला, ताकि महामारी के कारण आई मंदी से जल्द से जल्द उबरा जा सके और अर्थव्यवस्था में सुधार का मार्ग प्रशस्त हो सके।

इंडिया एक्ज़िम बैंक के प्रबंध निदेशक श्री डेविड रस्कीना ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि निर्माण क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना का केंद्र बिंदु होगा। श्री रस्कीना ने कहा कि वर्तमान समय में भारत के आर्थिक विकास, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वैश्विक मूल्य श्रृंखला में जबरदस्त भागीदारी के कारण भारत की क्षमता पर विदेशों का ध्यान केंद्रित है, अतः घरेलू क्षमताओं को बढ़ाने के लिए संरचनात्मक सुधारों पर तेजी से प्रगति के लिए यह समय उचित होगा।

ओडिशा के ट्राइबल शिल्पकारों के लिए ट्राइबल जूलरी डिजाइन विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

इंडिया एक्ज़िम बैंक ने ओडिशा के भुवनेश्वर स्थित अन्वेषा आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स के 20 आदिवासी कारीगरों के लिए 30 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए सहयोग दिया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम ट्राइबल जूलरी के डिजाइन विकास के लिए आयोजित किया गया है। अन्वेषा ट्राइबल आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स (अन्वेषा), गैर-लाभकारी संगठन है, जो आदिवासी कारीगरों के प्रशिक्षण/ क्षमता निर्माण और उनके उत्पादों की मार्केटिंग के माध्यम से ओडिशा के आदिवासी समुदाय के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए प्रयासरत है।

अन्वेषा के सचिव, श्री दमबरुधर बहरा ने कहा, हम पिछले 6 वर्षों से एक्ज़िम बैंक से जुड़े हैं। बैंक ने हमारी प्रगति में मदद की है जिसके लिए हम एक्ज़िम बैंक के आभारी रहेंगे और आशा करते हैं कि भविष्य में भी हमें एक्ज़िम बैंक से सहयोग मिलता रहेगा।

अन्वेषा के 20 आदिवासी महिला कारीगरों के लिए बैंक के सहयोग से किया जा रहा यह डिजाइन विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम पहला ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम है। इसे कोविड-19 महामारी के मद्देनजर सुरक्षित दूरी जैसी सावधानियों को ध्यान में रखते हुए ऑनलाइन आयोजित किया गया है।

इस कार्यक्रम के मेंटर श्री पुनीत कौशिक अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त डिजाइनर हैं। उन्हें इस क्षेत्र में आदिवासी शिल्पकारों के साथ मिलकर काम करने का तीन दशकों से अधिक का अनुभव है। उन्हें संस्कृति मंत्रालय से जूनियर रिसर्च फेलोशिप मिली है और वह जवाहरलाल नेहरू ट्रस्ट के नेहरू रिसर्च एसोसिएट भी रहे हैं। साथ ही वह 'दस्तकार' जैसी प्रतिष्ठित सोसायटी के बोर्ड के सदस्य भी हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से उन्होंने पारंपरिक शिल्प तकनीकों को अपनाने और उन्हें आज की जरूरतों के अनुरूप बनाने की संकल्पना की।

एक्ज़िम बैंक की उप प्रबंध निदेशक श्रीमती हर्षा बंगारी ने अपने स्वागत संबोधन में आदिवासी कारीगरों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान में अन्वेषा के प्रयासों की प्रशंसा की और कार्यक्रम की सफलता की कामना की। ■

देशों का आर्थिक परिदृश्य

बोलिविया

कोविड–19 के चलते बोलिविया की अर्थव्यवस्था में 2020 में 8.9% तक की गिरावट का अंदेशा है। किन्तु 2021 में 3.8% की जीडीपी वृद्धि के साथ इसमें आंशिक सुधार की भी उम्मीद है। अंतरराष्ट्रीय कमोडिटी मूल्यों में भारी गिरावट से बोलिविया के कमोडिटी निर्यातों को बड़ा धक्का लगा है। अर्जेंटीना और ब्राजील से प्राकृतिक गैस की मांग मंदी रहने के कारण विदेश व्यापार क्षेत्र में अस्थिरता रहने के आसार हैं। ईंधन की कम कीमतों और कमजोर मांग के चलते 2020 में मुद्रास्फीति दर के 2019 की 1.8% की तुलना में औसतन 1.1% के न्यून स्तर पर बने रहने की संभावना है। बोलिविया की मुद्रा एक यूएस डॉलर की तुलना में 6.91 के स्तर पर रही। खनिज और प्राकृतिक गैस के निर्यातों में आई बड़ी गिरावट के चलते चालू खाता घाटा 2019 में जीडीपी के 3.3% की तुलना में 2020 में बढ़कर 3.7% रहने की आशंका है। तथापि, आर्थिक गतिविधियां संकुचित होने के चलते आयातों में भी कमी आएगी, जिससे चालू खाता घाटा बहुत ज्यादा नहीं बढ़ेगा। बोलिवियाई अर्थव्यवस्था में 2021 के बाद से सुधार आना शुरू होने की उम्मीद है, लेकिन यह सुधार धीमा और विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग स्तर का होगा। बोलिविया की अर्थव्यवस्था के 2019 की जीडीपी के स्तर पर 2023 तक पहुंचने के आसार हैं।

बांग्लादेश

बांग्लादेश की वास्तविक जीडीपी 2019–20 की 5.2% की तुलना में 2020–21 में 3.8% रहने की संभावना है। यह मंदी मुख्य रूप से सरकार द्वारा कोविड–19 के एहतियात के तहत लॉकडाउन जैसे उपायों के चलते रही, जिनसे 2019–20 की चौथी तिमाही (अप्रैल–जून) के दौरान आर्थिक गतिविधियां ठप पड़ गईं। मुद्रास्फीति दर गत वर्ष की 5.6% की तुलना में 2020–21 में 5.3% रहने के आसार हैं। हालांकि अंतरराष्ट्रीय भागीदारों और बहुपक्षीय संस्थाओं से पूंजीगत प्रवाह जारी रहने से विशेष रूप से परिवहन और ऊर्जा क्षेत्रों में बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं में निवेश प्रवाह बना रहेगा, जिससे आर्थिक वृद्धि को गति मिलेगी। व्यापार खाते में बढ़ते घाटे के चलते प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले बांग्लादेश की मुद्रा टका के कमजोर बने रहने के आसार हैं। इससे रेमिटैंस और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशों में जावक में भी कमी आएगी और बांग्लादेशी टका के 2020 में एक यूएस डॉलर के मुकाबले कुछ गिरकर 84.9 टका तक पहुंचने की आशंका है, जो 2019 में एक यूएस डॉलर के मुकाबले 84.5 टका था। वस्तु निर्यातों और आयातों में भी कमी आने के आसार हैं। चालू खाता घाटा 2021 में जीडीपी का 0.9% के स्तर पर रहने की आशंका है।

दक्षिण अफ्रीका

कोरोना वायरस के चलते लगा आर्थिक झटका दक्षिण अफ्रीका की अर्थव्यवस्था को 2020 में गहरी मंदी में धकेलने वाला है। अप्रैल में सख्त लॉकडाउन के बाद मई और जून में अर्थव्यवस्था को चरणबद्ध तरीके से पुनः खोलने के बावजूद वास्तविक जीडीपी में 8% का संकुचन होने के आसार हैं। यह 2009 की मंदी के दौरान हुए आर्थिक संकुचन से 1.5% अधिक होगा। बाधित होती सप्लाई चेन और परिवहन सेवाओं, गिरते व्यापार और पर्यटन में कमी तथा महामारी को फैलने से रोकने के लिए घरेलू स्तर पर बरते जा रहे सख्त प्रतिबंधों के चलते बड़ी क्षति होगी। महामारी के चलते आई मंदी और न्यून तेल कीमतों के कारण उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति दर 2020 में 3.3% रहने के आसार हैं, जो पिछले कई वर्षों में न्यूनतम स्तर होगा। मार्च 2020 में दक्षिण अफ्रीका की निवेश ग्रेड क्रेडिट रेटिंग का गिरना इसकी मुद्रा रैंड के लिए नकारात्मक है और 2020 में इसके एक यूएस डॉलर के मुकाबले गिरकर 17.10 रैंड के आसपास रहने की संभावना है। कुछ वस्तुओं सहित खनिज (जैसे प्लैटिनम–समूह की धातुएं) निर्यातों में अन्य के मुकाबले अधिक लचीलापन होने के कारण अलग–अलग बाजार स्थितियों का सामना करना पड़ेगा। वैश्विक रुकावटों के चलते वाहन निर्यातों में गिरावट की आशंका है, पर कृषि निर्यात अच्छा रहने की संभावना है। देश का चालू खाता घाटा 2019 के 3% की तुलना में 2020 में घटकर 2.3% रहने की संभावना है।

संयुक्त राज्य अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेरिका को 1930 के बाद सबसे बड़ी मंदी का सामना करना पड़ रहा है। वर्ष 2019 में 2.2% की जीडीपी वृद्धि की तुलना में अमेरिका की वास्तविक जीडीपी 2020 में 5.3% तक संकुचित होने की आशंका है। इसमें उपभोक्ता खर्च (जिसका हिस्सा जीडीपी का 70% है) और अप्रैल–मई 2020 में औद्योगिक उत्पादन में बड़ी गिरावट परिलक्षित होती है। उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति 2020 में 0.7% के स्तर पर रहने की संभावना है। मार्च और अप्रैल में कच्चे तेल की कीमतों में आई भारी गिरावट से परिवहन लागत में उल्लेखनीय रूप से कमी आएगी, जो यूएस इंडेक्स का प्रमुख भाग है। तथापि, कोरोना वायरस के चलते सप्लाई चेन में रुकावट, विशेष रूप से चीन से आने वाली बाधाओं के चलते खाद्य पदार्थों और इलेक्ट्रॉनिक्स सहित अन्य वस्तुओं की लागत बढ़ सकती है। यूरो जोन के मुकाबले यूएस में आर्थिक आधार मजबूत रहने और वैश्विक आर्थिक संकट के बीच निवेशकों के यूएस डॉलर के प्रति मोह के चलते 2020 की पहली छमाही में यूरो के मुकाबले यूएस डॉलर कुछ मजबूत रहा। लेकिन दूसरी छमाही में यूरो के मुकाबले यूएस डॉलर के धीरे–धीरे कमजोर होने की आशंका है, क्योंकि यूएस को कोविड–19 पर काबू कर पाने में अब भी भारी मशक्कत करनी पड़ रही है, जिससे निवेशकों का विश्वास डगमगा रहा है। इस सबके बीच, आयातों में कमी आने से चालू खाता घाटा 2.2% से घटकर 2020 में जीडीपी के 1.8% हो जाने की संभावना है। ■

मुद्रा की प्रवृत्तियां

रूसी रूबल

₽ रूसी रूबल 8 सितंबर, 2020 को यूएस डॉलर के मुकाबले गिरकर 76.5737 के पांच माह के न्यूनतम स्तर पर पहुंच गया। हालांकि 17 सितंबर, 2020 को इसमें थोड़ा सुधार भी हुआ और यह 74.9296 के स्तर पर पहुंच गया। मासिक चालू खाता जुलाई के 2.3 बिलियन यूएस डॉलर के सरप्लस से गिरकर अगस्त में 1.3 बिलियन यूएस डॉलर के घाटे में तब्दील हो गया। इसकी एक वजह लोकप्रिय स्थानों के लिए विदेशी यात्राओं को पुनः खोलना, सेवाओं का आयात माना जा रहा है, जिसने अगस्त से ओपेक+ से तेल आपूर्ति संबंधी प्रतिबधों में कुछ नरमी के प्रभाव को नगण्य कर दिया।

समग्र रूप में देखें, तो 12 माह का चालू खाता सरप्लस जुलाई के 43 बिलियन यूएस डॉलर से अगस्त के 30 बिलियन यूएस डॉलर तक संकुचित होना जारी रहा। ब्रेंट की कीमतों में हाल में आई गिरावट को देखते हुए यदि इसकी कीमतें 45 यूएस डॉलर प्रति बैरल से 40 यूएस डॉलर प्रति बैरल के नीचे गईं तो 2020 की चौथी तिमाही में चालू खाते के लिए यह दबाव वाला फैक्टर रहेगा। संकुचित होते चालू खाता और स्थानीय पूंजी प्रवाहों में बड़े सुधार के अभाव के चलते यूएस डॉलर के मुकाबले रूबल के लिए अनिश्चितता बढ़ रही है। फिलहाल के परिदृश्य में रूबल के यूएस डॉलर के मुकाबले 70–75 के स्तर पर आने के लिए विदेश नीति बैकड्रॉप का सामान्य होना, तेल की कीमतों में स्थिरता आना और वैश्विक रूप से यूएस डॉलर का कमजोर होना जरूरी है।

हांगकांग डॉलर

HK$ हांगकांग का केंद्रीय बैंक इस वर्ष अपना डॉलर तुलनात्मक रूप से उच्च ब्याज दरों पर बेचता रहा है और शेयर ऑफरिंग से यूएस डॉलर की तुलना में हांगकांग डॉलर को मजबूती मिली है। हांगकांग मौद्रिक प्राधिकरण ने 2020 में यूएस डॉलर के मुकाबले अपनी मुद्रा को मजबूत बनाए रखने के लिए 40 बार हस्तक्षेप किया। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक 2008 और 2009 के वित्तीय संकट के बाद से यह सबसे अधिक सक्रिय हस्तक्षेप रहा। विनिमय दर को स्थिर बनाए रखने के लिए 132 बिलियन हांगकांग डॉलर बेचे जा चुके हैं।

कोरोना वायरस महामारी से उत्पन्न आर्थिक मंदी से निपटने के लिए यूएस फेडरल रिज़र्व द्वारा मार्च में दरों में कटौती कर जीरो के आसपास करने से यूएस डॉलर ब्याज दरें हांगकांग की दरों से नीचे पहुंच गईं और निवेशकों ने बेहतर रिटर्न के लिए हांगकांग डॉलर आस्तियों का रुख किया। 1983 से अंगीकृत की गई एक नीति के अनुसार एचकेएमए अपनी मुद्रा को एक यूएस डॉलर के मुकाबले 7.75 से 7.85 हांगकांग डॉलर के बीच रखने के लिए डॉलर का क्रय–विक्रय करता है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि हांगकांग डॉलर को मजबूत बनाए रखने के लिए 2008 और 2009 के आर्थिक संकट के दौरान किए गए उपायों से अधिक हस्तक्षेप किए जाएं। अब जब यूएस डॉलर कमजोर हो रहा है और अंतरराष्ट्रीय तथा चीनी निवेशकों की ओर से हांगकांग इक्विटी में आवक बढ़ रही है, हाल के महीनों में हांगकांग डॉलर मजबूत होता रहा है।

घाना सेडी

₵ घाना की मुद्रा सेडी 1994 से हर साल गिरती जा रही है। किन्तु मई के बाद वाले स्तर से यदि अब इस मुद्रा में और गिरावट होती है तो केंद्रीय बैंक हस्तक्षेप करने के लिए तैयार है। ब्लूमबर्ग के अनुसार, बैंक ऑफ घाना ने सेडी को स्थिर करने के लिए स्पॉट और फॉरवार्ड बाजारों में डॉलर की बिक्री की है तथा कयासों को न्यूनतम रखने के लिए विदेशी मुद्रा विनिमय की कड़ी निगरानी कर रहा है। फरवरी में 3 बिलियन यूएस डॉलर के यूरो बॉन्ड की बिक्री के बाद केंद्रीय बैंक के पास विदेशी मुद्रा का पर्याप्त भंडार है।

इसका मतलब यह हुआ कि यह मुद्रा इस साल 2.1% की गिरावट होने के बाद संभवतः अब और कमजोर नहीं होगी, जो 2006 के बाद से इसका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन होगा। 2006 में इसमें 1.4% की गिरावट आई थी। ब्लूमबर्ग द्वारा समेकित डेटा के अनुसार, बीते ढाई दशक के दौरान सेडी में औसतन 18.8% की सालाना गिरावट दर्ज की गई है। 17 सितंबर, 2020 को सेडी में थोड़ा परिवर्तन आया और यह एक यूएस डॉलर के मुकाबले 5.73 सेडी के स्तर पर रही। यूएस और घाना में चुनाव के चलते जोखिम से सेडी पर दबाव बढ़ सकता है, किन्तु बाजार की उम्मीदों के अनुसार, इसके आसार कम लगते हैं कि घाना का केंद्रीय बैंक अपनी मुद्रा को और कमजोर होने देगा।

थाईलैंड बात

฿ थाईलैंड की मुद्रा थाई बात 02 अप्रैल, 2020 को 33.19 के दो साल के न्यूनतम स्तर पर पहुंच गई। इससे पहले 12 नवंबर, 2018 को यह इस स्तर पर पहुंची थी और फिर कुछ मजबूत होकर 17 सितंबर, 2020 को 31.16 के स्तर पर पहुंच गई। थाई बात की मजबूती ने विनियामकों की चिंता बढ़ा दी है। बैंक ऑफ थाईलैंड मुद्रा की मजबूती को थोड़ा नियंत्रित करने के लिए सोने के व्यापार और थाई बात के बीच के लिंक को अलग करने पर विचार कर रहा है।

थाई अर्थव्यवस्था को कोविड–19 महामारी के कारण घरेलू और विदेशी मांग कमजोर होने से विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। तदनुसार बिजनेस और उपभोक्ताओं का आत्मविश्वास कमजोर हुआ है। बैंक ऑफ थाईलैंड अपनी अर्थव्यवस्था को मौद्रिक नीति के अनुसार नियंत्रित कर रहा है। मई में बेंचमार्क ब्याज दर को 25 बीपीएस घटाकर 0.50% कर दिया गया और इस तरह नवंबर 2019 से अब तक कुल मिलाकर 100 बीपीएस की कटौतियां की जा चुकी हैं। हालांकि 5 सितंबर, 2020 को एमपीसी ने पॉलिसी दर को 0.50% बनाए रखने के लिए एकमत से वोट किया, लेकिन माना जा रहा है कि बैंक ऑफ थाईलैंड के उपाय अभी खत्म नहीं होने वाले हैं और यह इस तथ्य को दर्शाता है कि मांग के कमजोर रहने के कारण मुद्रा अपस्फीति का दबाव बना हुआ है जून में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में 1.6% की वर्ष–दर–वर्ष गिरावट दर्ज की गई। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के अनुसार, वित्तीय प्रोत्साहन से बैंक ऑफ थाईलैंड के इन उपायों को बल मिला है। घोषित किए गए वित्तीय उपाय जीडीपी के 12% के समतुल्य हैं। ■

एक्ज़िम मित्र

आहार सप्लीमेंट के लिए विश्लेषण प्रमाण पत्र संबंधी जानकारी

खाद्य सुरक्षा और मानक (आयात) विनियम, 2017 के अनुसार, आयातित खाद्य पदार्थों की जांच आयातक द्वारा प्रस्तुत निर्यातक देश के विश्लेषण प्रमाण पत्र और खाद्य सुरक्षा और मानक (संदूषक, आविष और अवशिष्ट) विनियम, 2011 के मापदंडों के अनुसार की जानी जरूरी है।

आयातित खाद्य उत्पादों के परीक्षण के लिए प्राधिकृत अधिकारी द्वारा विश्लेषण प्रमाण–पत्र तभी स्वीकार किया जाता है, जब यह निर्यातक देश की आईएसओ 17025 मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला द्वारा जारी किया गया हो और उसमें उन मापदंडों व उत्पाद मैट्रिक्स के लिए वैध स्कोप हो। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण यह भी कहता है कि माल के साथ आने वाला विश्लेषण प्रमाण पत्र आईएसओ 17025 मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला द्वारा जारी किया गया होना चाहिए। साथ ही यह निर्यातक देश से माल के लदान की तारीख से तीन महीने से ज्यादा पुराना नहीं होना चाहिए।

भारत से ई–कॉमर्स निर्यात संबंधी जानकारी

केंद्रीय उत्पाद और सीमा शुल्क बोर्ड ने विदेश व्यापार नीति 2015–20 के पैरा 9.17– के पालन के लिए 29 जुलाई, 2016 के परिपत्र 36/2016 – कस्टम्स के अनुसार एमईआईएस के तहत ई–कॉमर्स के निर्यात के लिए एक प्रक्रिया निर्धारित की है। निर्यातक इस परिपत्र का संदर्भ ले सकते हैं। निर्यात को सुविधाजनक बनाने के लिए और ई–कॉमर्स के माध्यम से भारत के निर्यातकों की पहुँच (विशेषकर लघु एवं मध्यम उद्यमों के लिए) वैश्विक स्तर तक ले जाने के लिए, सभी आईईसी धारकों को विदेशी डाकघरों (एफपीओ) के माध्यम से माल निर्यात करने की अनुमति दी गई है। डाक के माध्यम से ई–कॉमर्स निर्यात को सहायता देने के लिए केंद्रीय उत्पाद और सीमा शुल्क बोर्ड ने निर्यातक पोस्ट रेगुलेशन 2018 के तहत घोषणा फॉर्म निर्धारित किए हैं।

मांस के निर्यात संबंधी जानकारी

विदेश व्यापार महानिदेशक (डीजीएफटी) अनुसूची – 2 निर्यात नीति के अनुसार, चिल्ड और फ्रोजन मांस के निर्यात की अनुमति निर्यात (गुणवत्ता नियंत्रण और निरीक्षण अधिनियम), 1963 के अंतर्गत दी गई है, जो कच्चे मांस (चिल्ड और फ्रोजन) से संबंधित राजपत्र की अधिसूचना में निर्दिष्ट प्रावधान के अध्यधीन है। मांस और मांस उत्पादों के निर्यात की अनुमति, निर्यात के समय निर्यातक द्वारा एक घोषणापत्र और कारखाने के रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट की प्रतियां प्रस्तुत करने के अध्यधीन है। यह रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) द्वारा जारी किया गया होना चाहिए। घोषणा में स्पष्ट अंकित होना चाहिए कि ये उत्पाद एपीडा पंजीकृत व एकीकृत बूचड़खाने से लिए गए हैं अथवा एपीडा पंजीकृत ऐसे मांस प्रसंस्करण संयंत्र से प्राप्त किए गए हैं, जहाँ कच्चा माल एपीडा पंजीकृत एकीकृत बूचड़खाने से लाया जाता है।

इन्कोटर्म्स 2010 और इन्कोटर्म्स 2020 के बीच मुख्य अंतर

इन्कोटर्म्स 2020 के प्राथमिक उद्देश्य समान हैं – अंतरराष्ट्रीय व्यापार लेनदेन में क्रेता और विक्रेता के दायित्वों को स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करना। साथ ही यह निर्दिष्ट करना कि विक्रेता से क्रेता को जोखिम कब और कैसे हस्तांतरित होते हैं, ये जोखिम कौन से होते हैं और क्रेता तथा विक्रेता द्वारा कितनी–कितनी लागत वहन की जानी चाहिए।

इन्कोटर्म्स नियम मुख्यतः डिलीवरी के बारे में हैं और प्रमुख बदलाव भी इसी हिस्से में किए गए हैं। इन्कोटर्म्स नियमों की व्याख्या के संबंध में कानूनी केस भी बहुत कम हैं। बल्कि जो मामले आए भी हैं, तो वे आमतौर पर किसी इन्कोटर्म्स नियम के गलत प्रयोग के कारण आए हैं। नए नियमों का परिचय खरीदारों और विक्रेताओं को सही इन्कोटर्म्स नियमों के स्पष्ट प्रयोग की जानकारी देता है। हर नियम के लिए व्याख्यात्मक नियम बना देने से अधिक स्पष्टता आ गई है। रंगीन रेखा–चित्र पॉइंट ऑफ डिलीवरी को समझने में मददगार हैं। प्रत्येक नियम में दायित्वों, डिलीवरी पॉइंट, लागत आदि का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त, अलग से तुलना भी दी गई है कि प्रत्येक नियम दायित्वों, डिलीवरी, लागत आदि से कैसे डील करता है। कौन से नियम में क्या कवर किया गया है और क्या नहीं।

पिछले नियमों की तुलना में नए नियमों में इस बात पर अधिक जोर दिया गया है कि कंटेनर शिपमेंट के लिए समुद्र या अंतरदेशीय जलमार्गों द्वारा परिवहन के नियमों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए, भले ही वे समुद्र के रास्ते ले जाए जा रहे हों।
इन्कोटर्म्स 2020 में, उपयोगकर्ता संभावित लागतों की पूरी सूची एक नज़र में देख सकते हैं। इसके अलावा, प्रत्येक आइटम की लागत आइटम से संबंधित आर्टिकल में भी उल्लिखित होती है, ताकि किसी वस्तु विशेष की बिक्री के बारे में जानकारी चाहने वाले उपयोगकर्ता को आसानी रहे। ■

आंकड़ों में भारतीय अर्थव्यवस्था

मर्चेंडाइज़ व्यापार

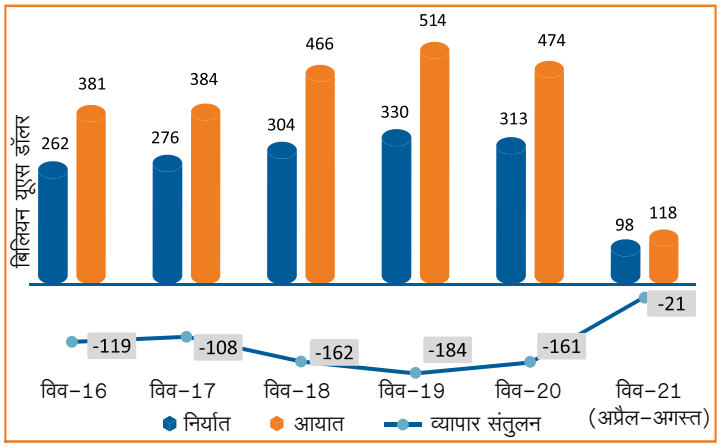

स्रोतः वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

सेवा व्यापार

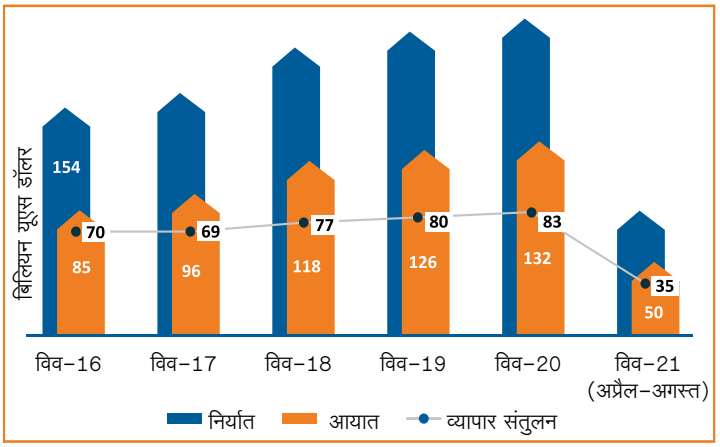

स्रोतः आरबीआई

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह

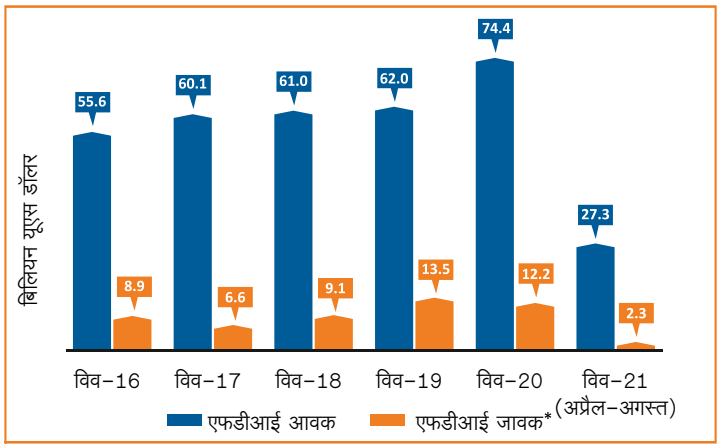

*नोटः * – इक्विटी, ऋण और इन्वोक की गई गारंटियों सहित एफडीआई जावक*
स्रोतः आरबीआई और वित्त मंत्रालय

उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति

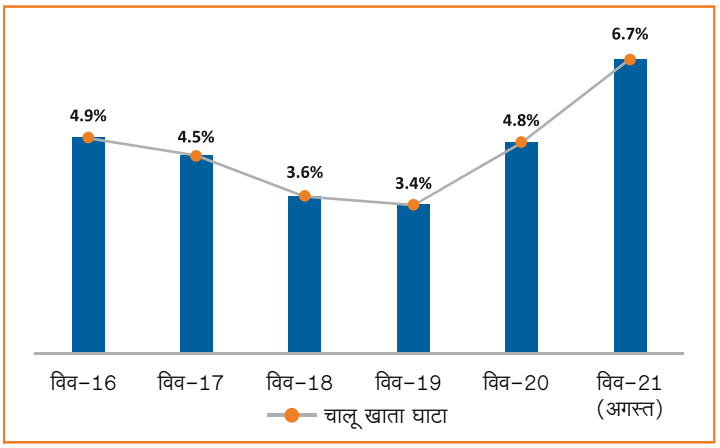

स्रोतः सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

चालू खाता घाटा

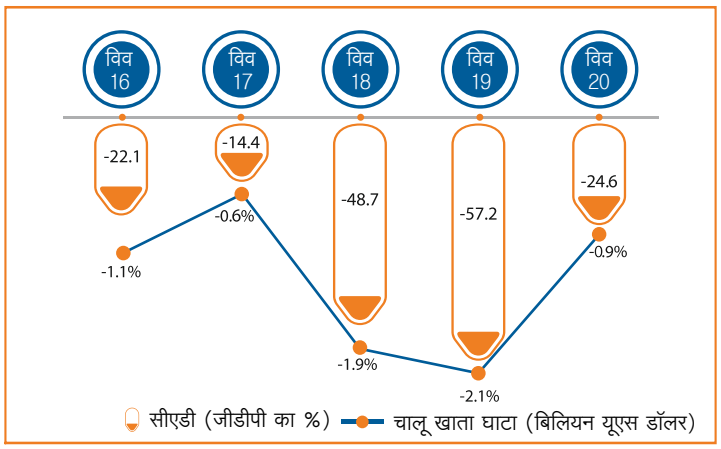

स्रोतः आरबीआई

क्षेत्रवार परिणाम

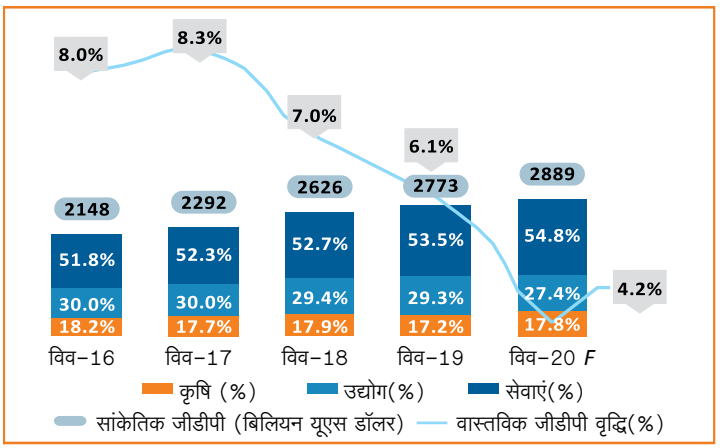

स्रोतः आईआईएफ एंड एमओएसपी

नोटः एफ–पूर्वानुमान